भारतीय संत, महात्मा, ऋषि, मुनि, महर्षि, परंपरा एवं मानवता



"संत परंपरा भारत की आत्मा है,
मानवता इसकी पहचान है।"

भारतीय संत परंपरा
त्याग, तपस्या और सेवा की अमर धरोहर।

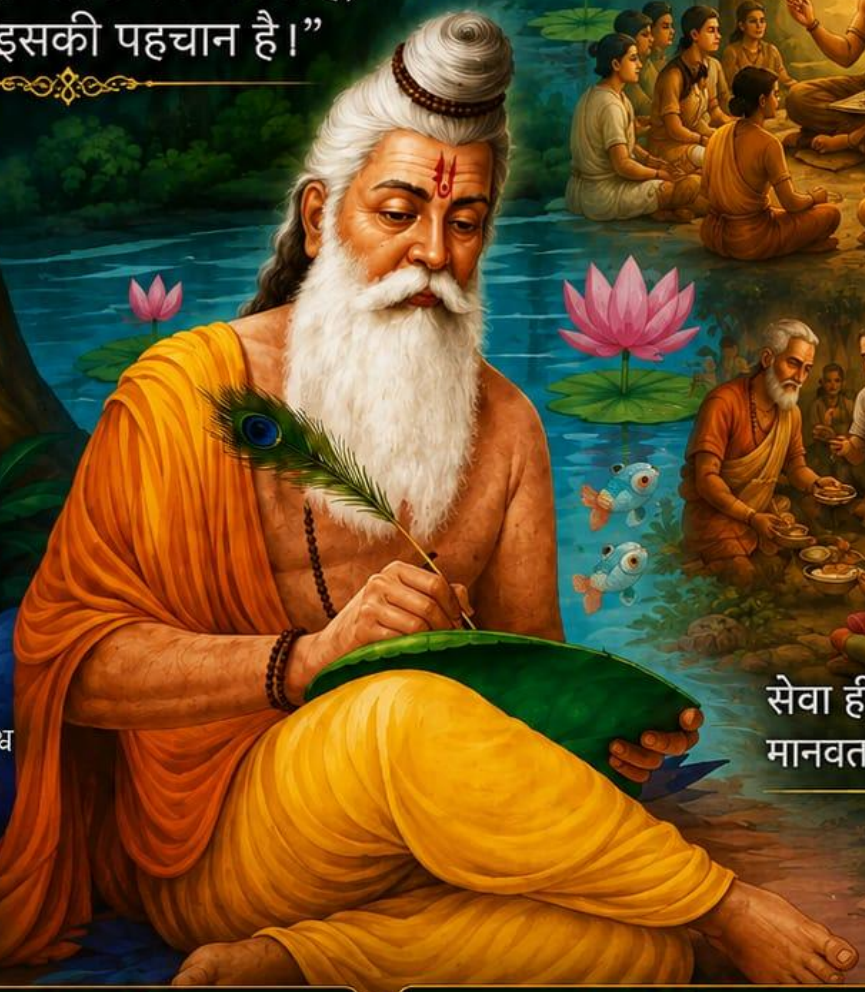
ऋषि-मुनि परंपरा
ज्ञान, ध्यान और सत्य की साधना।

महर्षि परंपरा
वेद, शास्त्र और विज्ञान की नींव।

महात्मा परंपरा
अहिंसा, करूणा और प्रेम का संदेश।

मानवता का मार्ग
वसुधैव कुटुम्बकम् – विश्व एक परिवार।

हमारा संकल्प
चरित्र निर्माण, सेवा, सद्भाव और विश्व शांति के लिए समर्पण।





सेवा ही साधना है,
मानवता ही धर्म है।

शोधार्थी –
रामेश्वर लाल गुर्जर

शोध निर्देशक –
प्रो. (डॉ) अजीत कुमार जैन

सत्य की खोज | धर्म का पालन | प्रेम और करूणा | निस्वार्थ सेवा | विश्व शांति

आओ मिलकर भारतीय संत परंपरा के मूल्यों को अपनाएँ
और मानवता की सेवा करें!

मानवता में व्यावहारिक अनुसंधान के उपरांत प्रस्तुत शोध प्रबंध

अनुसंधान का विषय :- भारतीय संत, महात्मा, ऋषि,मुनि,महर्षि,परम्परा एवं मानवता

शोधार्थी का नाम - रामेश्वर लाल गुर्जर

पंजीयन संख्या HR/369/102 Date 22/09/2025

शोधार्थी का पता:- स्टेशन रोड शिव नगर रजवाड़ा होटल के पीछे कुचामन जिला -डीडवाना कुचामन

शोध **पर्यवेक्षक** : प्रो.(डॉ) अजीत कुमार जैन

दिव्य प्रेरक कहानियां मानवता अनुसंधान केंद्र

DIVYA PRERAK KAHANIYAN HUMANITY RESEARCH CENTRE

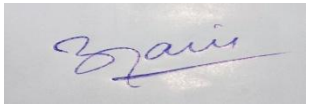
An ISO 21001:2018 Certified Research Institution Regd. Under Indian Trust Act 1882, Government of India पंजीकृत कार्यालय - ठेकमा, जिला - आजमगढ़, उत्तर प्रदेश (भारत) Website: www.dpkavishek.in | Email: dpkhrc@gmail.com

पर्यवेक्षक का प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि दिव्य प्रेरक कहानियां मानवता अनुसंधान केंद्र अंतर्गत शोधार्थी श्री रामेश्वर लाल गुर्जर पंजीयन संख्या HR/369/102 शीर्षक **भारतीय संत, महात्मा, ऋषि,मुनि,महर्षि,परम्परा एवं मानवता के** तहत प्रस्तुत अनुसंधान/ शोध प्रबंध मूल्य अप्रकाशित भाग है इसके द्वारा मेरे निर्देशन में यह शोध कार्य किया गया है यह शोध प्रबंध साहित्य चोरी रहित उत्कृष्ट तथा शोध प्रशासन के लिए उपयुक्त है वर्तमान में यह व्यावहारिक अनुसंधान कार्य समाज में सामाजिकता समरसता आपसी एकता प्रेम सहयोग परोपकार तथा नैतिकता मानवता युक्त सौहार्दपूर्ण वातावरण बनाने में अति महत्वपूर्ण साबित होगा इस तरह का अनुसंधान कार्य करना अनुसंधान कर्ता की कार्य कुशलता व सच्ची मानवता की प्रति समर्पण को दर्शाता है

यह प्रमाणित किया जाता है कि शोधार्थी ने अपना अनुसंधान कार्य दिव्य प्रेरक कहानियां मानवता अनुसंधान केंद्र द्वारा प्रतिपादित सभी नियमों में निर्देशनों के तहत पूर्ण किया है

हम शोधार्थी के उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं



पर्यवेक्षक का नाम- प्रो.(डॉ) अजीत कुमार जैन

पता- जैन गली धुलिय आगरा (उ. प्र .)

पद नाम - प्रोफेसर एवम पूर्व विभागाध्यक्ष

शोधार्थी घोषणा पत्र

मैं रामेश्वर लाल गुर्जर (शोधार्थी, दिव्य प्रेरक कहानियाँ मानवता अनुसंधान केन्द्र) यह प्रमाणित करता हूं कि प्रस्तुत शोध प्रबंध " भारतीय संत महात्मा ऋषि मुनि महर्षि परम्परा एवं मानवता जो व्यावहारिक अनुसंधान का मूल भाग है तथा अप्रकाशित है । इस शोध प्रबंध को प्रो. (डॉ.) अजीत कुमार जैन (वरिष्ठ शिक्षाविद् एंव कॅरियर काउंसलर) के मार्गदर्शन में मैंने पूरा किया है । मैं यह घोषणा करता हूं कि इस शोध कार्य में किसी प्रकार की साहित्यिक चोरी नहीं की गई है तथा इससे पहले किसी अन्य डिग्री डिप्लोमा के लिये उपयोग नहीं किया गया है। यह भी प्रमाणित करता हूं कि मैने अपना अनुसंधान कार्य 'दिव्य प्रेरक कहानियाँ मानवता अनुसंधान केन्द्र' द्वारा प्रतिपादित सभी नियम व निर्देशों के तहत पूर्ण किया है।

दिनांक :- 11/08/2026



शोधार्थी के हस्ताक्षर

रामेश्वर लाल गुर्जर

HR/360/102 Date 22/09 /2025

भारतीय संत, महात्मा, ऋषि,
. मुनि,महर्षि,परम्परा एवं मानवता

H C S आजमगढ़ उत्तरप्रदेश में शोध प्रस्तुत करने हेतु

शोध संक्षिप्तीकरण 2025

शोधनिर्देशक

प्रो.(डॉ) अजित कुमार जैन

शोधार्थी

रामेश्वर लाल गुर्जर

ज्ञान की वर्तमान दशा

संतों महात्माओ का मानवता के प्रति खोज और योगदान अत्यंत व्यापक और गहन है| जो केवल आध्यात्मिकता तक सीमित न होकर विज्ञान स्वास्थ्य समाज और जीवन जीने की कला तक फैला हुआ है| उन्होंने हजारों सालों तक ब्रह्मांड प्रकृति के रहस्यों को उजागर कर मानव सभ्यता की नीव रखी थी| संतों और महात्माओं ने मानवता के उत्थान, प्रेम और नैतिक मूल्यों की स्थापना में अतुलनीय योगदान दिया है। उनकी खोज का मुख्य केंद्र मनुष्य के भीतर छिपी हुई चेतना को जगाना और समाज से भेदभाव, अहंकार और अज्ञानता को मिटाना रहा है। मानवता के प्रति संतों और महात्माओं का योगदान और उनकी खोज को मुख्य बिंदुओं में समझा जा सकता है:-

1. **आत्म-खोज और आंतरिक शांति:-** संतों ने बाहरी आडंबरों को छोड़कर आंतरिक शांति और आत्म-साक्षात्कार को सर्वोपरि माना है। उनका मानना था कि ईश्वर हर प्राणी के भीतर मौजूद है। कबीर, नानक और मीराबाई जैसे संतों ने प्रेम और भक्ति के माध्यम से मनुष्य को अपने वास्तविक स्वरूप (आत्मा) को पहचानने का मार्ग दिखाया।

2. **सामाजिक समरसता और समानता:-** महात्माओं ने हमेशा जाति धर्म और वर्ग के भेद से परे जाकर मानवता का संदेश दिया। समाज में व्याप्त कुरीतियों, छुआछूत और ऊंच-नीच के खिलाफ आवाज उठाई। उदाहरण के लिए संत रविदास और गुरु नानक देव जी ने सभी इंसानों को एक समान माना और 'लंगर' जैसी प्रथाओं के माध्यम से सामाजिक समरसता की नींव रखी।3. **अहिंसा और करुणा का संदेश:-** गौतम बुद्ध और महावीर स्वामी जैसे युगपुरुषों ने अहिंसा और जीवों के प्रति करुणा का मार्ग दिखाया। आधुनिक युग में महात्मा गांधी ने सत्य और अहिंसा के सिद्धांतों का प्रयोग

करके न केवल भारत की स्वतंत्रता में अहम भूमिका निभाई बल्कि पूरी दुनिया को शांति और संघर्ष-समाधान का एक नया दृष्टिकोण प्रदान किया।

4. नैतिक और मानवीय मूल्यों की स्थापना:- संतों की शिक्षाएं हमेशा से सत्य, अहिंसा, अस्तेय (चोरी न करना), और अपरिग्रह (आवश्यकता से अधिक संग्रह न करना) पर आधारित रही हैं। इन नैतिक मूल्यों ने समाज को पतन से बचाया और एक अनुशासित, सहिष्णु और सहयोगी मानव समाज का निर्माण किया।

5. जन-कल्याण और सेवा:- भारतीय संस्कृति में संतों का मूल मंत्र "जन सेवा ही प्रभु सेवा" रहा है। मदर टेरेसा, रामकृष्ण परमहंस और स्वामी विवेकानंद जैसे महात्माओं ने दीन-दुखियों की सेवा और शिक्षा के प्रसार को सर्वोच्च धर्म माना। स्वामी विवेकानंद ने तो युवाओं में आत्मविश्वास जगाते हुए **"नर सेवा ही नारायण सेवा"** का मूल मंत्र दिया। हमारे ऋषि मुनियों ने वसुधेव कुटुम्बकम् का मंत्र देकर सम्पूर्ण धरती को एक परिवार माना है यह मंत्र व्यापक अर्थ लिय हुये है |

इस विषय को 4 अध्यायों में विभाजित किया है।

प्रथम अध्याय में परिचय व काल (Time), मानवता की परिभाषा

द्वितीय अध्याय में राजनीतिक विचारधारा में मानवता

तृतीय अध्याय में भारतीय सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेश में मानवता
(1) सांस्कृतिक (2) साहित्यिक

चौथा अध्याय में भारतीय सामाजिक परिवेश में मानवता, दान- पुण्य, मानव - कल्याण, धर्मशाल एवं एनजीओ

- उपसंहार शोधसारांश

प्रथम अध्याय परिचयात्मक

संत, महात्मा, ऋषि, मुनि, महर्षि, परंपरा और मानवता विषय पर मैंने अपना शोध कार्य किया है।

शुरू से ही आध्यात्मिक प्रभाव मेरे जीवन पर पड़ा इसका प्रमुख कारण है मेरी दादी जी श्रीमती भूरी देवी उन्होंने बचपन से ही हमें जीवो के प्रति प्रेम करुणा दया और अतिथि देवो भव की भावना कूट-कूट कर भरी है यही कारण है कि आज शोध कार्य में मैने मानवता विषय का चयन किया इस कारण मैंने सोचा इस विषय पर गहन अध्ययन करूं। इसलिय मानवता के लिया किए गए कौन कौन से कार्य है जिनका मै शोध कर सकू इसलिए मैने ये विषय का चुनाव किया है |

संत और महात्माओं ने समाज और मानवता के उत्थान के लिए आध्यात्मिक मार्गदर्शन प्रदान करने के साथ-साथ कई अमूल्य कार्य किए हैं| उन्होंने समाज को सही राह दिखाने, भेदभाव मिटाने और नैतिक मूल्यों को स्थापित करने में अपना संपूर्ण जीवन लगा दिया

मानवता का संदेश सभी संत, महात्मा, मुनि, ऋषि महर्षियों ने दिया है। उनकी यह देन आज के मानव प्राणी के लिए अति आवश्यक है।

इस भारत भूमि पर अनेक संतों ने जन्म लिया और अपने जीवन को मानवता की सेवा के लिए समर्पण किया उनमें से प्रमुख संत निम्न अनुसार है

1) संत तुलसीदास (2) संत कबीर दास (3) संत मीराबाई (4) संत नरसी मेहता (5) गुरु नानक देव (6) संत ज्ञानेश्वर (7) संत समर्थ रामदास स्वामी (8) संत जनाबाई (9) संत नामदेव (10) संत बहिणाबाई (11)

संत झूलेलाल (12) संत रामसुख (13) संत गोरखनाथ (14) संत कन्होपत्रा (15) संत एकनाथ (16) संत सूरदास (17) संत मुक्ताबाई (18) संत तुकाराम (19) संत रैदास (रविदास) (20) कर्मा बाई (21) संत दादूदयाल

मानवता की परिभाषा

मानवता (Humanity) का अर्थ केवल मनुष्य होना नहीं है बल्कि इंसानों में निहित प्रेम, करुणा, दया और परोपकार की भावना है| यह वह नैतिक गुण है जो हमें एक-दूसरे के दुःख-दर्द को समझने, निस्वार्थ भाव से मदद करने और सभी प्राणियों के प्रति सम्मान रखने की प्रेरणा देता है|

एक दृष्टिकोण अथवा वैचारिक व्यवस्था जिसका संबंध मानव से है न कि दैवी अथवा अलौकिक पदार्थों से। मानववाद एक विश्वास अथवा दृष्टिकोण है जो सामान्य मानवीय आवश्यकताओं पर बल देता है और मानवीय समस्याओं के समाधान के लिए केवल तर्कसंगत समाधान तलाशता है और मानव को उत्तरदायी एवं प्रगतिशील बुद्धिजीवी मानता है।

मानववादी, मानव की क्षमता में विश्वास रखते हैं। उनका कहना है कि मानव में बहुत सामर्थ्य है| और यदि उसे विकास का अवसर मिले और उसका पूर्ण विकास हो जाए तो मानव बहुत ऊंचा उठ सकता है। मानववादियों का मानव की अच्छी प्रकृति में विश्वास है। बी आर आंबेडकर, महात्मा गांधी, रसल और टॉलस्टाय बीसवीं सदी के महान मानववादी थे। अपने प्रारंभिक लेखन में मार्क्स भी मानववादी था। कालमार्क्स की प्रारंभिक कृतियों में 'इकोनॉमिक एंड फिलास्फिकल मैन्यूस्क्रिप्ट्स' (1842) सम्मिलित है जो 1848 में प्रकाशित कम्युनिस्ट मैनीफेस्टो से पूर्व लिखी गई थी। एम.एन राय भी मानववादी थे। उनकी

वैचारिक यात्रा लंबी थी। उसने अपनी यात्रा मार्क्सवाद से प्रारंभ की और उग्र मानववाद पर समाप्त की।

मध्ययुग में मानव को ईश्वर के अधीन बना दिया गया था। उसकी पहुंच प्रकृति के गुप्त रहस्यों तक थी परंतु अंतिम विश्लेषण में पूर्णतः ईश्वर के प्रति समर्पित थे। इस परिप्रेक्ष्य में पुनर्जागरण और ज्ञानोदय से बदलाव आया। मनुष्य इस सृष्टि का केन्द्र बन गया। अब उसका स्वतंत्रता से इच्छा करना और स्वयं अपना स्वामी बनना संभव होने लगा था| उसके पास परंपराओं और ईश्वर के आदेशों के स्थान पर अपने और अपने साथियों के लिए जीवन चुनने की स्वतंत्रता थी। इसका अभिप्रायः यह था कि अब उसके पास अपना घर और अपना व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता थी। धार्मिक ग्रंथ व परंपराएं अब उसके लिए गौण थी| यद्यपि धर्म अभी भी अपनी भूमिका निभाता रहा है| तथापि महत्वपूर्ण परिवर्तन यह हुआ कि मनुष्य को सत्य और असत्य, सही और गलत, न्याय और अन्याय तथा अच्छे और बुरे में भेद करने का विवेकपूर्ण अधिकार मिल गया।

मानववादी चिंतन में मनुष्य अपने निजी जीवन में स्वतंत्र होता है। वह न केवल अद्वितीय है अपितु भिन्न भी है जो कभी दूसरा नहीं हो सकता। नैतिक जीवन के नियम निर्धारण के लिए उसने अंतनिर्हित प्राकृतिक अधिकार भी प्राप्त किए। बाद में इसके साथ एक अन्य पक्ष और जुड़ा जब मानव ने सार्वजनिक क्षेत्र में भी स्वतंत्रता का दावा किया और राजनीतिक शासन चुनने के अपने अधिकार पर बल दिया। इस प्रकार लोकतंत्र, सरकार का एकमात्र वैध रूप बन गया। यह आंदोलन 18वीं शताब्दी के अंतिम वर्षों में अमरीकी और फ्रांसीसी क्रांतियों के

दौरान पूरे जोर पर था। दोनों क्रांतियां इस विचार से प्रेरित थीं कि कोई भी सत्ता/शक्ति भले ही वह परंपरा,परिवार अथवा राज्य हो मनुष्य की इच्छा से श्रेष्ठतर नहीं हो सकती।

<u>मानवता की परिभाषाएं :-</u>

"खूनी संघर्ष के बीच दुश्मन के लिए मानवता की भीख मांगना"।

—सीजी बोवर्स

"मानवता के दुखों के प्रति तीव्र सहानुभूति" ।

—मौरिस बोवरा

मेरे अनुसार मानवता

मानवता मनुष्य में वह श्रेष्ट गुण है जो करुणा, दया, प्रेम, नैतिकता, सहानुभूति आदि सद्गुणों से निर्मित होता है जिस मनुष्य में नैतिकता प्रेम दया करुणा का भाव होगा वह मानवीय कार्य में उतनी ही रुचि रखेगा वर्तमान में मानवता खत्म होती जा रहा है इसलिए हम सबको मानवता के सरंक्षण एवम सवर्धन का प्रयास करना चाहिए|

जनकल्याण के लिए भाईचारे की भावना से काम करना चाहिए और नैतिक मूल्यों को बचाए रखने के लिए हमें प्रयास करना चाहिए और मानवता की रक्षा के लिए परमार्थ के कार्य में प्रत्येक व्यक्ति को योगदान देना चाहिए व जन कल्याण के लिए परमार्थ की भावना से कार्य करना चाहिए| वर्तमान में मानव में नैतिक गुणों कि कमी होती जा रही है और विचार संकिर्ण होते जा रहें है| इसके परिणामस्वरूप व सहयोग सहानुभूति और सामाजिक उत्तरदायित्व कि भावना कमजोर होती जा रही है| आज मानव स्वंय तथा अपने परिवार तक ही सीमित होता जा रहा है |इस कारण हमें आने वाली पीढ़ी को नैतिक मूल्यों कि शिक्षा देनी चाहिए तथा सहयोग कि भावना सिखानी चाहिएऐसी स्थिति में आवश्यक है कि आने वाली पीढ़ी को नैतिक मूल्यों, मानवीय गुणों तथा सहयोग की भावना की शिक्षा प्रदान की जाए। बालकों को अच्छे संस्कार दिए जाएँ, जिससे वे भविष्य में आदर्श नागरिक बन सकें। जब नागरिक नैतिक, जिम्मेदार और संवेदनशील होंगे, तभी राष्ट्र का समुचित विकास संभव होगा। एक सशक्त और नैतिक राष्ट्र ही विश्व में शांति, सद्भाव तथा मानव कल्याण को बढ़ावा दे सकता है

अतः हमें सामाजिक एवं मानवीय मूल्यों को ध्यान में रखते हुए अपने आचरण और कार्यों का संचालन करना चाहिए। मानव जीवन में नैतिकता, सहयोग, परोपकार तथा मानवता जैसे गुणों का विकास ही एक आदर्श समाज की स्थापना का आधार है।

दर्शन व राजनीतिक विचारधारा में मानवता

दर्शन

दर्शन (Philosophy) जीवन, जगत, सत्य और अस्तित्व के मूल रहस्यों को समझने का एक तार्किक और क्रमबद्ध प्रयास है। यह हमें जीवन को सही दृष्टिकोण से देखने, सोचने और सत्य का साक्षात्कार करने की कला सिखाता है।दर्शन को मुख्य रूप से दो प्रमुख संदर्भों में समझा जा सकता है:

1. **भारतीय संदर्भ:-** संस्कृत में 'दर्शन' शब्द 'दृश्' धातु से बना है, जिसका अर्थ है—'जिसके द्वारा सत्य या यथार्थ की अनुभूति हो'।
2. **पाश्चात्य (Western) संदर्भ:-** अंग्रेजी में इसे Philosophy कहते हैं, जो ग्रीक शब्दों 'फिलोस' (प्रेम) और 'सोफिया' (ज्ञान) से मिलकर बना है। इसका अर्थ 'ज्ञान के प्रति अनुराग' होता है।

दर्शन के प्रमुख प्रकार (शाखाएं)

दर्शन मुख्य रूप से उन बड़े सवालों के जवाब तलाशता है, जिनका विज्ञान के पास सीधा उत्तर नहीं है। इसकी मुख्य शाखाएं निम्नलिखित हैं:

- **तत्वमीमांसा (Metaphysics):-** इसके अंतर्गत सृष्टि की उत्पत्ति, ईश्वर, आत्मा, और सत्य के अंतिम स्वरूप का अध्ययन किया जाता है।

- **ज्ञानमीमांसा (Epistemology):- ज्ञान क्या है? ज्ञान का स्रोत क्या है? हम किसी चीज़ को कैसे जान सकते हैं? इन प्रश्नों का तार्किक विश्लेषण यहाँ होता है।**
- **मूल्यमीमांसा (Axiology):- इसके तहत नीतिशास्त्र (Ethics - सही क्या है, गलत क्या है) और सौंदर्यशास्त्र (Aesthetics - कला और सुंदरता का अध्ययन) आते हैं।**

भारतीय और पाश्चात्य दर्शन

*** <u>भारतीय दर्शन</u>:- यह केवल बौद्धिक चर्चा तक सीमित नहीं है, बल्कि इसे जीवन जीने का तरीका और 'मोक्ष' (दुखों से मुक्ति) का साधन माना गया है। भारतीय दर्शन के अंतर्गत मुख्य रूप से छह आस्तिक दर्शन (षट्-दर्शन) आते हैं**

1 न्याय

2 वैशेषिक

3 सांख्य

4 योग

5पूर्व मीमांसा

6 वेदांत

*** <u>पाश्चात्य दर्शन</u>:- सुकरात, अरस्तु और प्लेटो जैसे विचारकों से शुरू हुआ यह दर्शन मुख्य रूप से तर्क, बहस और तार्किक सिद्धांतों पर आधारित होता है।**

<u>दर्शन का महत्व</u>:- दर्शन हमें अंधविश्वास से निकालकर विवेकपूर्ण तरीके से सोचना सिखाता है। यह मनुष्य को बेहतर इंसान बनने और जीवन के वास्तविक उद्देश्य को समझने में मदद करता है।

भारतीय दर्शन में मानवता

भारतीय दर्शन में मानवता का अर्थ मात्र भौतिक अस्तित्व नहीं बल्कि 'सर्वजन हिताय' और संपूर्ण जगत को एक परिवार (वसुधैव कुटुंबकम) मानना है। यहाँ मनुष्य को प्रकृति और ईश्वर का अभिन्न अंग माना गया है। इसका अंतिम लक्ष्य आत्म-साक्षात्कार के माध्यम से सभी प्राणियों के कल्याण और नैतिक उत्थान की प्राप्ति है।भारतीय चिंतन और दर्शन में मानवता के प्रमुख आयाम निम्नलिखित हैं:

1. वसुधैव कुटुंबकम (सार्वभौमिक बंधुत्व) भारतीय संस्कृति और उपनिषदों का मूल मंत्र है कि सारी पृथ्वी एक परिवार है। यहाँ की सोच किसी एक संप्रदाय या वर्ग तक सीमित न होकर संपूर्ण विश्व को अपने में समाहित करती है। यह विचार संपूर्ण मानव जाति के बीच आत्मीयता, प्रेम और सहयोग का भाव पैदा करता है।

2. नैतिक कर्तव्य और कर्मयोग भारतीय दर्शन (विशेषकर श्रीमद्भगवद्गीता) में मानवता का आधार 'निःस्वार्थ कर्म' है। कर्म को प्रधानता देते हुए यह माना गया है कि मनुष्य का सबसे बड़ा धर्म और कर्तव्य (धर्म) बिना किसी भेदभाव के मानवता की सेवा करना है।

3. अध्यात्म और समभाव (अद्वैत वेदांत) अद्वैत वेदांत के अनुसार प्रत्येक जीव में एक ही चेतना (आत्मा) का वास है। जब कोई व्यक्ति सभी प्राणियों में उसी परम शक्ति को देखता है तो घृणा, स्वार्थ और हिंसा के लिए कोई स्थान नहीं बचता। यह विचार मानव-मानव के बीच की सभी दीवारों को गिराकर समभाव लाता है।

4. प्रकृति के साथ सामंजस्य पश्चिमी विचारधारा से भिन्न, भारतीय दर्शन में प्रकृति और मनुष्य को अलग-अलग नहीं देखा गया है। नदियाँ, पहाड़, पेड़ और पशु-पक्षी—सभी को ईश्वरीय अंश माना गया है। मानव का विकास प्रकृति के दोहन में नहीं, बल्कि उसके साथ संतुलन बनाकर जीने में निहित है।

5. अहिंसा और करुणा जैन और बौद्ध दर्शन का उदय ही मानवीय दुखों के निवारण और अहिंसा पर आधारित था। 'अहिंसा परमो धर्मः' (अहिंसा ही सबसे बड़ा धर्म है) का पालन करके मनुष्य सभी प्राणियों के प्रति दया और करुणा का भाव जागृत करता है।

6. एकात्म मानववाद आधुनिक काल में पं. दीनदयाल उपाध्याय और स्वामी विवेकानंद जैसी महान विभूतियों ने भारतीय दर्शन को नए संदर्भों में प्रस्तुत किया। एकात्म मानववाद (Integral Humanism) व्यक्ति, समाज, प्रकृति और ईश्वर के बीच एक अटूट समन्वय स्थापित करता है। यह भौतिक और आध्यात्मिक दोनों दृष्टियों से मानव के सर्वांगीण विकास का समर्थन करता है।

भारतीय दर्शन में मानवता पर मेरे विचार

"संपूर्ण पृथ्वी हमारा परिवार है" ऐसी भावना हमारे सदियों से चली आ रही है हमारे "ऋषि-मुनियों" ने जगत में भ्रमण कर इस बात का प्रचार प्रसार किया की संपूर्ण पृथ्वी हमारा परिवार है|

हमें सर्वजनहित यानी संपूर्ण पृथ्वी का कल्याण कैसे हो इस प्रकार से कार्य करना चाहिए| जिन कार्यो में नैतिकता और आध्यात्मिक मूल्य निहित हों, हमें उन नैतिक मूल्यों का संपूर्ण पृथ्वी पर प्रचार प्रसार करना चाहिए इन मूल्यों से हम मानवता के अंदर हो रहे भेदभाव को मिटा सकते हैं|

संपूर्ण विश्व में अहिंसा, प्रेम, करुणा, दया, सहानुभूति आदि मूल्य का प्रचार-प्रसार करके विश्व शांति के लिए प्रेरित कर सकते हैं और मानव कल्याण के उत्थान के कार्य कर सकते हैं |मानव के प्रति हो रहें अत्याचारों को समाप्त कर सकते हैं|

भारतीय दर्शन का अनुसरण करके हम विश्व में शांति व्यवस्था कायम कर सकते हैं| संपूर्ण विश्व को अहिंसा और सत्य के मार्ग पर ले जा कर जगत कल्याण कर सकते है|

राजनीतिक विचारधारा में मानवता

राजनीतिक विचारधारा में मानवता (Humanism in Political Ideology) एक ऐसा दृष्टिकोण है जो राज्य, सत्ता और नीतियों के केंद्र में 'मनुष्य' और उसकी गरिमा को रखता है। यह धर्म, जाति या सीमाओं से परे सभी इंसानों के कल्याण, अधिकारों और स्वतंत्रता की वकालत करता है। मानवतावादी राजनीतिक विचारधारा के मुख्य सिद्धांत

व्यक्ति की गरिमा:- यह विचारधारा मानती है कि राज्य और संस्थाएं मानव के लिए हैं न कि मानव राज्य के लिए प्रत्येक व्यक्ति का जीवन अमूल्य है।

मौलिक अधिकार और स्वतंत्रता:- यह अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, समानता और मानवाधिकारों का पुरजोर समर्थन करती है।

कल्याणकारी राज्य (Welfare State):- मानवतावादी नीतियां गरीबों, कमजोर वर्गों और समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति की सहायता पर जोर देती हैं।

लोकतंत्र और सहिष्णुता:- यह विचार तानाशाही या कट्टरपंथ के विपरीत लोकतांत्रिक मूल्यों, संवाद और आपसी सहयोग को बढ़ावा देता है।प्रमुख मानवतावादी राजनीतिक विचारधाराएं

उदारवाद (Liberalism):- यह व्यक्तिगत स्वतंत्रता, तर्क और मुक्त समाज पर जोर देता है।

लोकतांत्रिक समाजवाद (Democratic Socialism):- यह आर्थिक और सामाजिक समानता के माध्यम से सभी नागरिकों के जीवन स्तर को ऊंचा उठाने का प्रयास करता है।

गांधीवादी विचारधारा:- भारत में महात्मा गांधी का दर्शन 'मानवता' पर आधारित था जिसमें साधन और साध्य दोनों की पवित्रता पर जोर दिया गया तथा सर्वोदय और अहिंसा को प्रमुख माना गया।

उदारवादी विचारधारा के अनुसार मानवता

उदारवादी (liberal) विचारधारा के अनुसार मानवता का अर्थ प्रत्येक व्यक्ति की स्वतंत्रता, गरिमा और उसके अधिकारों को सर्वोच्च मानना है इसके तहत हर इंसान को अपने जीवन, संपत्ति और विचारों के अनुसार जीने का जन्मजात अधिकार है जो तर्क और नैतिकता पर आधारित होता है|

उदारवादी दृष्टिकोण में "मानवता" को समझने के लिए निम्नलिखित मुख्य बातों को समझना आवश्यक है|

* **व्यक्ति की सर्वोच्चता** (Individualism):- उदारवाद मानता है कि समाज से ऊपर व्यक्ति होता है। मानवता का अर्थ है हर इंसान को अपनी क्षमता पहचानने और अपनी शर्तों पर जीवन जीने की पूरी आजादी देना|

* **समानता** (Equality):- उदारवाद के अनुसार सभी मनुष्य जन्म से समान हैं किसी भी व्यक्ति के साथ धर्म, जाति, लिंग या वर्ग के आधार पर भेदभाव अमानवीय है |

* **स्वतंत्रता की सीमा:-** उदारवाद के अनुसार किसी भी व्यक्ति को इतनी स्वतंत्रता है कि वह जो चाहे करे, लेकिन उसकी आजादी दूसरे व्यक्ति के अधिकारों और स्वतंत्रता में बाधक नहीं बननी चाहिए|

* **मानवाधिकार और न्याय:** राज्य का कर्तव्य केवल यह सुनिश्चित करना है कि किसी भी नागरिक के अधिकारों का हनन न हो व मानव अधिकारों की रक्षा करने का कार्य किया जायेगा|मानव के साथ न्याय किया जायेगा |अच्छे के साथ अच्छा व बुरे के साथ बुरा किया जाना चाहिए|

मार्क्सवाद के अनुसार मानवता

मार्क्सवाद के अनुसार मानवता कोई अमूर्त या आध्यात्मिक अवधारणा नहीं है बल्कि यह भौतिक परिस्थितियों, उत्पादन प्रणाली और वर्ग संघर्षों से निर्धारित होती है। कार्ल मार्क्स का मानना था कि वास्तविक मानवता तभी प्राप्त हो सकती है जब मनुष्य पूंजीवादी शोषण से मुक्त होकर एक समतावादी समाज का निर्माण करे|

मार्क्सवादी दृष्टिकोण में मानवता के मुख्य बिंदु:-

* **वर्ग विभाजन और शोषण:-** मार्क्सवाद के अनुसार, मानव समाज हमेशा शोषक (संसाधनों के मालिक) और शोषित (श्रमिक) वर्गों में बंटा रहा है। पूंजीवादी व्यवस्था में मुनाफा कमाने की होड़ मानवता को कुचल देती है और मनुष्य को केवल एक वस्तु (मशीन का पुर्जा) बना देती है|

* **श्रम ही मानव का निर्माता है:-** मार्क्स के अनुसार श्रम मनुष्य की मूल प्रकृति है। श्रम के माध्यम से ही मनुष्य अपनी भौतिक आवश्यकताओं को पूरा करता है और अपना विकास करता है|

* **अलगाव (Alienation) का सिद्धांत:-** पूंजीवाद में श्रमिक अपने द्वारा बनाई गई वस्तुओं, उत्पादन प्रक्रिया और यहाँ तक कि अपने साथी इंसानों से भी अलग-थलग (अजनबी) हो जाता है| जिससे वास्तविक मानवता का हनन होता है|

*** राज्य और धर्म की भूमिका:-** मार्क्स ने धर्म और बुर्जुआ (पूंजीपति) राज्य को मानवता की भलाई के विरोधी के रूप में देखा। उनके अनुसार, ये संस्थाएं शोषक वर्ग के हितों की रक्षा करती हैं और शोषितों को भ्रमित रखती हैं|

*** क्रांति और वर्ग संघर्ष:-** मार्क्स का मानना था कि पूंजीवादी व्यवस्था अपने आप समाप्त नहीं होगी। सर्वहारा वर्ग (मजदूरों) को संगठित होकर हिंसक क्रांति के माध्यम से उत्पादन के साधनों पर कब्जा करना होगा|

*** साम्यवाद (Communism):** निजी संपत्ति के उन्मूलन के बाद एक ऐसा वर्गहीन और राज्यविहीन समाज बनेगा, जहाँ "हर कोई अपनी क्षमता के अनुसार काम करेगा और हर किसी को उसकी आवश्यकता के अनुसार मिलेगा।" यही अवस्था सच्ची मानवता की स्थापना होगी।

समाजवाद के अनुसार मानवता

समाजवाद के अनुसार मानवता का अर्थ सामाजिक न्याय, समानता, और परस्पर सहयोग पर आधारित एक ऐसी व्यवस्था है जहाँ किसी भी व्यक्ति का जाति, धर्म या वर्ग के आधार पर शोषण न हो यह विचारधारा व्यक्ति की गरिमा को सर्वोपरि मानती है|

समाजवादी दर्शन में मानवता के प्रमुख स्तंभ निम्नलिखित हैं:

* **समानता:-** समाजवाद, पूंजीवाद द्वारा उत्पन्न आर्थिक और सामाजिक असमानताओं का विरोध करता है| सभी मनुष्यों को समान अवसर और अधिकार मिलने चाहिए|

* **शोषण-मुक्त समाज:-** मानवता तभी संभव है जब संसाधनों पर चंद लोगों के बजाय पूरे समाज का नियंत्रण हो, ताकि कोई भी व्यक्ति किसी दूसरे का आर्थिक या सामाजिक शोषण न कर सके|

* **सामाजिक न्याय:-** समाज के कमजोर, वंचित और हाशिए पर रहने वाले वर्गों का उत्थान ही सच्ची मानवता है|

* **सामूहिक कल्याण:-** समाजवादी विचारधारा में 'व्यक्तिवाद' (Self-interest) की तुलना में 'सामूहिक कल्याण' (Collective well-being) को प्राथमिकता दी जाती है|

भारतीय समाजवाद (जैसे डॉ. राम मनोहर लोहिया के विचार) के अनुसार, मानवता को भौगोलिक सीमाओं में नहीं बाँधा जा सकता, यह पूरी दुनिया में भाईचारे और समता का प्रसार करने वाली भावना है|

व्यक्तिवाद के अनुसार मानवता

व्यक्तिवाद (Individualism) के अनुसार मानवता सामूहिक समाज या राज्य के अधीन नहीं है बल्कि यह स्वतंत्र और आत्मनिर्भर व्यक्तियों का योग है। इस विचारधारा के तहत व्यक्ति सर्वोपरि है उसकी गरिमा और अधिकार सबसे ऊपर हैं और मानवता का विकास व्यक्तिगत स्वतंत्रता को सुनिश्चित करके ही संभव है।

प्रमुख बिंदु इस प्रकार हैं:-

* **व्यक्ति सर्वोपरि:-** व्यक्तिवाद मानता है कि मानव अस्तित्व का केंद्र बिंदु स्वयं व्यक्ति है। समाज या राज्य बाद में आते हैं और उनका मुख्य उद्देश्य व्यक्तिगत अधिकारों और स्वतंत्रता की रक्षा करना है।

* **आत्मनिर्भरता और स्वतंत्रता:-** मानवता का वास्तविक अर्थ प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन के निर्णय लेने, अपनी क्षमता का विकास करने और स्वतंत्र रूप से कार्य करने की पूर्ण छूट देने में है।

* **नैतिकता का आधार:-** व्यक्तिवादी नैतिकता के अनुसार कोई भी कार्य या निर्णय तब तक नैतिक है जब तक वह किसी व्यक्ति की स्वतंत्रता का हनन नहीं करता और उसकी गरिमा को बनाए रखता है।

* **राज्य की सीमित भूमिका:-** इस विचारधारा के अनुसार मानवता की भलाई राज्य के भारी हस्तक्षेप या नियंत्रण से नहीं बल्कि न्यूनतम सरकार और अधिकतम व्यक्तिगत स्वतंत्रता से होती है।

लोकतांत्रिक उदारवाद के अनुसार मानवता

लोकतांत्रिक उदारवाद (Democratic Liberalism) के अनुसार मानवता का अर्थ मानव गरिमा, विवेक और प्राकृतिक अधिकारों (स्वतंत्रता, समानता और जीवन का अधिकार) की रक्षा करना है इस विचारधारा में व्यक्ति को समाज और राज्य का केंद्र बिंदु माना जाता है, जहाँ सभी को बिना किसी भेदभाव के समान अवसर और स्वतंत्रता प्राप्त होती है|

लोकतांत्रिक उदारवाद के अनुसार मानवता की प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित हैं|

* **मानव गरिमा सर्वोपरि:-** प्रत्येक मनुष्य जन्म से ही विवेकशील और स्वतंत्र है। राज्य का कर्तव्य है कि वह हर व्यक्ति के आत्म-सम्मान और गरिमा को बनाए रखे|

* **प्राकृतिक और मौलिक अधिकार:-** उदारवादी व्यवस्था में मानवता की रक्षा का आधार मानवाधिकार हैं। इसमें अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, धर्म की स्वतंत्रता, और संपत्ति का अधिकार शामिल है|

* **समानता और न्याय:-** मानवता का अर्थ है जाति, धर्म, लिंग या वर्ग के आधार पर भेदभाव न करना। कानून के समक्ष सभी को समान सुरक्षा और अवसर मिलना चाहिए|

* **सहिष्णुता और विविधता:-** एक उदारवादी समाज में मानवता का सम्मान तभी हो सकता है, जब अलग-अलग विचारों और संस्कृतियों के लोग शांति और सहिष्णुता के साथ एक-दूसरे के साथ रहें|

* **लोकतांत्रिक सहमति:-** उदार लोकतंत्र में सरकारों की वैधता जनता की सहमति पर निर्भर करती है

नारीवादी विचारधारा के अनुसार मानवता

नारीवाद के अनुसार मानवता का अर्थ एक ऐसी समावेशी और समान दुनिया से है जहाँ लिंग, जाति या वर्ग के आधार पर किसी के साथ कोई भेदभाव न हो। नारीवादी दृष्टिकोण मानता है कि पारंपरिक समाज पुरुष-केंद्रित (पितृसत्तात्मक) रहे हैं, जिसने महिलाओं की स्वतंत्रता और मानवीय क्षमता को दबाया है। इसके अनुसार, सच्ची मानवता तभी स्थापित हो सकती है जब पितृसत्ता की बेड़ियों को तोड़कर सभी को समान अधिकार, सम्मान और विकास के अवसर मिलें।

नारीवादी विचारधारा के अंतर्गत मानवता को कई प्रमुख आधारों पर समझा जाता है|

* **स्त्रियां केवल लैंगिक प्राणी नहीं हैं:-** नारीवादियों का मानना है कि महिलाओं को केवल माँ, पत्नी या बहन जैसे पारंपरिक रिश्तों की सीमाओं में नहीं बांधा जाना चाहिए। उन्हें एक स्वतंत्र इंसान के रूप में पहचान मिलनी चाहिए।

* **समानता ही सच्ची मानवता है:-** नारीवाद का मूल आधार ही यह है कि लिंग की परवाह किए बिना हर व्यक्ति को समान राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक अधिकार मिलने चाहिए।

* **दमन और हिंसा की समाप्ति:-** कट्टरपंथी और अन्य नारीवादी विचारधाराओं के अनुसार मानवता तब तक अधूरी है जब तक समाज से

महिलाओं के खिलाफ होने वाली यौन हिंसा, घरेलू दुर्व्यवहार और पितृसत्तात्मक उत्पीड़न का अंत नहीं हो जाता।

*** मानवीय विकल्पों का विस्तार:-** नारीवाद का लक्ष्य सभी के लिए मानवीय विकल्पों का विस्तार करना है ताकि महिलाएं भी पुरुषों के समान अपनी बुद्धि और योग्यता के आधार पर स्वतंत्र निर्णय ले सकें।

संक्षेप में नारीवाद मानता है कि मानवता को केवल पुरुषों के नजरिए से नहीं देखा जा सकता। इसमें महिलाओं के वास्तविक अनुभवों और अधिकारों को शामिल किए बिना मानवीय दृष्टिकोण अधूरा है।

पूंजीवादी विचारधारा में मानवता

पूंजीवादी विचारधारा में 'मानव' और 'मानवता' को मुख्य रूप से आर्थिक और उपयोगितावादी दृष्टिकोण से देखा जाता है।

पूंजीवाद के अनुसार मानवता के प्रमुख पहलू निम्नलिखित हैं:

* **उत्पादक और उपभोक्ता:-** पूंजीवादी व्यवस्था में प्रत्येक मनुष्य को मुख्य रूप से एक उत्पादक (श्रमिक) या उपभोक्ता के रूप में आंका जाता है। यहाँ मानवीय मूल्य बाजार की मांग और आपूर्ति पर निर्भर करते हैं |

* **व्यक्तिगत स्वतंत्रता व प्रतिस्पर्धा:-** यह प्रणाली मानती है कि प्रत्येक व्यक्ति का अपना स्वार्थ और लाभ कमाने की इच्छा ही समाज की प्रगति का मुख्य आधार है खुली प्रतिस्पर्धा के माध्यम से ही मानवीय क्षमता का अधिकतम विकास होता है|

* **संसाधन का अधिकार:-** पूंजीवाद के अंतर्गत 'मानवता' सभी के लिए समान संपत्ति का दावा नहीं करती बल्कि यह मानती है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी योग्यता और पूंजी के आधार पर संपत्ति का अर्जन करने का पूर्ण अधिकार है|

* **आलोचनात्मक दृष्टिकोण:-** इसके विपरीत, मानवतावादी और समाजवादी विचारकों का मानना है कि पूंजीवादी व्यवस्था अत्यधिक स्वार्थपूर्ण है जो लाभ

कमाने की होड़ में मानवता को अमीर (मालिक) और गरीब (श्रमिक) वर्गों में बांट देती है|

प्रमुख राजनीतिक विचारकों के अनुसार मानवता

एम.एन.राय के अनुसार मानवता

एम.एन. राय नव-मानववाद को सर्वश्रेष्ठ मानते थे जिसके द्वारा मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता बन सकता है ऐसा उनका विचार था। इस वाद में न तो राष्ट्रवाद की भावना का समावेश है और न ही रंगभेद का। उन्होंने विचारों में मानव की व्यक्तिगत स्वतन्त्रता को सर्वोपरि माना। एम.एन. राय के अनुसार, व्यक्ति की तर्कशक्ति उसके ज्ञान के विस्तार के साथ जुड़ी है।

अतः जहाँ अज्ञान की सीमाएं टूटती हैं वहाँ वह नई जीवन-पद्धति की तलाश करता है। यही तलाश उसकी स्वतंत्रता को सार्थक करती है। अतः मनुष्य की स्वतंत्रता ज्ञान के विस्तार के साथ-साथ अपनी आकांक्षाओं के विस्तार में निहित है।

राय का नव-मानववाद 'मनुष्य' को संपूर्ण सृष्टि की धुरी मानता है। वह शुद्ध 'मनुष्य' को मान्यता देता है ऐसे मनुष्य को नहीं जो किसी 'वर्ग', 'राष्ट्र' या अन्य प्रकार के सीमित समूह के पूर्व-निर्धारित लक्ष्य के साथ बँधा हो।

स्वतंत्र मनुष्य अपनी सहज-स्वाभाविक तर्कशक्ति से प्रेरित होकर अपनी सामान्य आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए परस्पर सहयोग के संबंध में बंध जाते हैं।

राय ज्ञान के अनंत विस्तार और मानव-विकास की अनंत संभावनाओं के प्रति आशावान हैं। चूंकि इस विकास की कोई सीमा नहीं है, इसलिए हमारे वर्तमान ज्ञान के आधार पर इसका कोई पूर्व-निर्धारित लक्ष्य स्वीकार नहीं किया जा सकता।

स्वतंत्रता की पहली शर्त वर्तमान बंधनों को तोड़ना है। मानवेन्द्र नाथ राय का आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन में विशिष्ट स्थान है। राय का राजनीतिक चिंतन लम्बी वैचारिक यात्रा का परिणाम है। वे किसी विचारधारा से बंधे हुए नहीं रहे।

उन्होंने विचारों की भौतिकवादी आधार भूमि और मानव के अस्तित्व के नैतिक प्रयोजनों के मध्य समन्वय करना आवश्यक समझा।

महात्मा गांधी के अनुसार मानवता

महात्मा गांधी के अनुसार मानवता का अर्थ सत्य, अहिंसा, प्रेम और निस्वार्थ सेवा है उनके विचार में, "मानव सेवा ही ईश्वर सेवा है" और सभी इंसानों को एक-दूसरे के दुःख को बांटकर बिना किसी भेदभाव के जीना चाहिए|

गांधीजी के मानवतावादी दृष्टिकोण के मुख्य बिंदु इस प्रकार हैं:

*** सत्य और अहिंसा (Satya & Ahimsa):- गांधीजी का मानना था कि मानवता का मूल आधार अहिंसा है। किसी को शारीरिक या मानसिक रूप से नुकसान न पहुँचाना और प्रेम के माध्यम से विरोधी का हृदय जीतना ही सच्ची मानवता है|**

*** मानव सेवा और ईश्वर (Service to Humanity):- उनके लिए धर्म का मतलब केवल कर्मकांड नहीं बल्कि मानव जाति की भलाई था। उनका दृढ़ विश्वास था कि पीड़ित और जरूरतमंद लोगों की सेवा करना ही ईश्वर की सच्ची पूजा है|**

* **आत्म-साक्षात्कार (Self-realization):-** गांधीजी के अनुसार, मानव जीवन का सबसे बड़ा लक्ष्य खुद को जानना और अपनी आत्मा को शुद्ध करना है। वे मानते थे कि प्रत्येक व्यक्ति के भीतर अच्छाई का वास होता है|

* **बिना भेदभाव के भाईचारा:-** उनके मानवतावाद में जाति, वर्ग, धर्म या रंग का कोई भेदभाव नहीं था। वे वसुधैव कुटुंबकम (पूरी दुनिया एक परिवार है) में विश्वास करते थे और सभी धर्मों का सम्मान करते थे गांधी जी मानवता के बारे में हमें 5 सबक सिखाते हैं|

गांधी-01

19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में भारत में जन्मे मोहनदास गांधी, जिन्हें 'महात्मा' के नाम से जाना जाता है, नागरिक अधिकारों के लिए अपने नेतृत्व के लिए प्रसिद्ध हैं। वे ब्रिटिश-शासित भारत में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के नेता थे। यद्यपि 1948 में उनकी हत्या कर दी गई, लेकिन शांति को बढ़ावा देने के लिए उनके वर्षों के सविनय अवज्ञा आंदोलन ने मार्टिन लूथर किंग जूनियर और नेल्सन मंडेला सहित अनगिनत अन्य नेताओं को प्रभावित किया है।

गांधी जी हमें क्या सिखा सकते हैं?

“आपको मानवता पर से विश्वास नहीं खोना चाहिए। मानवता एक सागर के समान है यदि सागर की कुछ बूँदें गंदी हों, तो पूरा सागर गंदा नहीं हो जाता।”

गांधी जी मानवता में दृढ़ विश्वास रखते थे । उन्हें पूरा भरोसा था कि दुनिया में अच्छे लोग मौजूद हैं। हाल के आतंकवादी हमलों के आलोक में यह देखना

मुश्किल हो गया है कि आज भी दुनिया में अच्छाई (और वह भी काफी हद तक) बची है। लेकिन, ऐसा नहीं है! अभी भी उम्मीद बाकी है । गांधी जी के शब्द मार्मिक और सत्य हैं। भले ही सागर में कुछ बूंदें मैली हों, लेकिन पूरा सागर मैला नहीं हो जाता।

“मनुष्य अपने विचारों का ही परिणाम होता है। वह जैसा सोचता है, वैसा ही बन जाता है।”

जब आप सुबह शीशे में देखते हैं तो सबसे पहले आपके मन में क्या आता है अगर आप किराने की दुकान पर खरीदारी के लिए लाइन में खड़े हैं तो पत्रिकाओं के कवर पर सजी-धजी तस्वीरों को देखकर आपके मन में क्या आता है

अगर आप बीमारी, विकलांगता या असफलता का सामना कर रहे हैं, तो आप अपने बारे में क्या सोचते हैं? इन विचारों के कारण आप क्या बन रहे हैं? जब हम सकारात्मक सोच में डूब जाते हैं तो हम स्वयं भी सकारात्मक हो जाते हैं।

अगर हम सोचते हैं कि हम असफल हो सकते हैं तो शायद हम असफल हो ही जाएंगे। जैसा हम सोचते हैं वैसा ही बन जाते हैं। अच्छे विचार सोचें। अपने बारे में और सोचें। आप जितना सोचते हैं उससे कहीं बेहतर कर रहे हैं।

"मानव के रूप में हमारी महानता दुनिया को फिर से बनाने की क्षमता में उतनी नहीं है यह परमाणु युग का मिथक है जितनी कि खुद को फिर से बनाने की क्षमता में है।"

हमें लग सकता है कि हमारे काम महत्वहीन हैं। ऐसा लग सकता है कि हम जो कर रहे हैं उसका कोई मूल्य नहीं है। शायद हम खुद से कहते हैं "दुनिया में बहुत बुराई है। यह कभी नहीं बदलेगी।" दुनिया को बदलने पर ध्यान देने के बजाय खुद को बदलने पर ध्यान दें। सुधार के लिए लक्ष्य निर्धारित करें।

अगर आप कोई भी बुरी आदत बदल सकते हैं तो वह क्या होगी सबसे पहले खुद को सुधारने पर काम करें।

मैं उसे धार्मिक कहता हूं जो दूसरों के दुख को समझता है।

हाल ही में दुनिया में घटी विनाशकारी घटनाओं को देखते हुए यह अत्यंत आवश्यक है कि हम अपने से परे देखें। जब त्रासदी होती है तो हम एकजुट होते हैं। हम करुणा और प्रेम दिखाते हैं। सच्चा धर्म सेवा करना और विभिन्न पृष्ठभूमि, धर्मों और दृष्टिकोणों के लोगों के प्रति सहानुभूति रखना है।

आज यह समझने का प्रयास करें कि कोई दूसरा व्यक्ति (सहकर्मी, पड़ोसी परिवार का सदस्य) किस दौर से गुजर रहा होगा—खुद को उनकी जगह रखकर देखें। जब आप उनसे उनका हालचाल पूछें तो ध्यान से सुनें और समझने का प्रयास करें।

कमजोर लोग कभी क्षमा नहीं कर सकते। क्षमा करना बलवानों का गुण है।

दूसरों को क्षमा करने का विश्वास रखें । क्षमा करना कमजोरी नहीं है, बल्कि यह शक्ति है। जब आप दूसरों को क्षमा करते हैं, तो आपमें अतिरिक्त शक्ति का संचार होता है। क्षमा हमें हार या दुख के बावजूद जीवन में आगे बढ़ने में सक्षम बनाती है। जब हम दूसरों को क्षमा करने का विश्वास रखते हैं, तो हम

अपने जीवन में अधिक शांति प्राप्त करते हैं । क्या कोई ऐसा व्यक्ति है जिसे आपको क्षमा करने की आवश्यकता है जिसने आपके साथ अन्याय किया है? आप आगे कैसे बढ़ सकते हैं?

गांधी जी ने हमें मानवता में कभी विश्वास न खोने, अपने विचारों पर ध्यान देने, स्वयं को सुधारने, दूसरों के प्रति सहानुभूति रखने और क्षमा करना सीखने की शिक्षा दी। गांधी जी एक बुद्धिमान व्यक्ति थे जिनके जीवन के सबक उनके 79 वर्षों से कहीं अधिक व्यापक हैं, जो उन्होंने पृथ्वी पर शांति, स्वीकृति और प्रेम के संदेश फैलाने में बिताए

पंडित जवाहर लाल नेहरू के अनुसार मानवता

पंडित जवाहरलाल नेहरू के अनुसार मानवता का अर्थ केवल लोगों की भलाई करना नहीं बल्कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण स्वतंत्रता सहिष्णुता और विश्व बंधुत्व पर आधारित एक ऐसी जीवन शैली है जो सभी को समान अवसर और गरिमा प्रदान करती है।

[1] नेहरू जी का मानवतावादी दृष्टिकोण निम्नलिखित मुख्य स्तंभों पर आधारित था:-

* **वैज्ञानिक मानववाद** (Scientific Humanism) :- नेहरू जी अंधविश्वास और रूढ़िवादिता के विरोधी थे। उनका मानना था कि मानवता की सच्ची प्रगति वैज्ञानिक सोच, तर्क और सत्य की निरंतर खोज के माध्यम से ही संभव है।

* **विश्व बंधुत्व** (Vasudhaiva Kutumbakam) :- वे 'गुटनिरपेक्षता' और शांति के प्रबल समर्थक थे। उनके अनुसार कोई भी राष्ट्र एकांत में नहीं रह सकता। पूरी दुनिया को एक परिवार के रूप में मिलकर रहना चाहिए, जहाँ युद्ध और हिंसा के लिए कोई जगह न हो|

* **लोकतंत्र और स्वतंत्रता (Democracy and Freedom) :-** नेहरू जी के लिए मानवता का सम्मान तभी हो सकता है जब हर व्यक्ति को अपने विकास के लिए समान अधिकार स्वतंत्रता और एक लोकतांत्रिक वातावरण मिले।

* **धर्मनिरपेक्षता (Secularism) :-** उन्होंने भारत जैसे विविधताओं वाले देश में सभी धर्मों के समान सम्मान और सहिष्णुता को मानवता का आवश्यक हिस्सा माना। उनके अनुसार धर्म एक व्यक्तिगत मामला है और इसे राजनीति या राष्ट्र की एकता में बाधक नहीं बनना चाहिए

नेहरू जी की मानवता की अवधारणा संकीर्ण राष्ट्रवाद से बहुत ऊपर थी। वे एक ऐसे न्यायपूर्ण प्रगतिशील और शांतिपूर्ण विश्व का निर्माण करना चाहते थे जहाँ शोषण और असमानता का कोई स्थान न हो।

डॉ. राम मनोहर लोहिया के अनुसार मानवता

डॉ. राम मनोहर लोहिया के अनुसार मानवता का अर्थ केवल जीवित रहना नहीं बल्कि एक ऐसी समतामूलक और शोषणमुक्त दुनिया का निर्माण करना है जहाँ जाति रंग लिंग या वर्ग के आधार पर किसी के साथ कोई भेदभाव न हो|

लोहिया जी के मानवतावादी दृष्टिकोण के प्रमुख बिंदु निम्नलिखित हैं:-

*** सप्तक्रांति (मानवता का आधार):- उन्होंने मानवता की भलाई के लिए सात क्रांतियों (सप्तक्रांति) का नारा दिया, जिनमें नर-नारी की समानता रंगभेद की समाप्ति, जाति-व्यवस्था का अंत आर्थिक समानता, व्यक्तिगत स्वतंत्रता विदेशी शासन का अंत और अहिंसा और सत्याग्रह की रक्षा मुख्य थीं|**

*** जाति और वर्ग का विनाश:- उनका मानना था कि जाति प्रथा मनुष्य-मनुष्य के बीच दीवार खड़ी करती है और मानवता को कलंकित करती है उनके अनुसार वास्तविक मानवता तभी संभव है, जब समाज से सभी प्रकार की ऊंच-नीच मिटा दी जाए|**

* **विश्व सरकार (वसुधैव कुटुंबकम):-**लोहिया सीमाओं में बंटी दुनिया के विरोधी थे वे एक 'विश्व नागरिकता' और 'विश्व सरकार' का सपना देखते थे जहाँ पूरी दुनिया का मानव समुदाय एक परिवार की तरह स्वतंत्र रूप से बिना पासपोर्ट-वीज़ा के आ-जा सके।

* **समान अवसर और गरिमा:-** उनके अनुसार मानवता की रक्षा के लिए हर व्यक्ति को शिक्षा, सम्मान और बुनियादी सुविधाएं समान रूप से मिलनी चाहिए|

संक्षेप में लोहिया जी के लिए मानवता का अर्थ एक ऐसी समतावादी (Egalitarian) व्यवस्था थी जहाँ हर व्यक्ति अपनी पूरी क्षमता के साथ स्वतंत्र और सम्मानित जीवन जी सके |

अरस्तु के अनुसार मानवता

यूनानी दार्शनिक अरस्तु (Aristotle) के अनुसार, मानव स्वभाव से एक "सामाजिक और राजनीतिक प्राणी" है। उनके दर्शन में मनुष्य और मानवता का अर्थ समाज और राज्य से जुड़ा हुआ है।

अरस्तु के अनुसार मानवता और मानव जीवन की मुख्य विशेषताएं निम्नलिखित हैं:-

* **सामाजिक एवं राजनीतिक प्राणी (Political/Social Animal):** अरस्तु का प्रसिद्ध कथन है कि "मनुष्य स्वभाव से एक राजनीतिक प्राणी है।" उनका मानना था कि कोई भी व्यक्ति समाज और राज्य से अलग रहकर नहीं जी सकता। 'जो व्यक्ति समाज से दूर रहता है वह या तो देवता होता है या फिर पशु'।

* **बुद्धि और नैतिकता (Reason and Virtue):-** अरस्तु के अनुसार मानव जाति को अन्य प्राणियों से अलग और श्रेष्ठ उसकी 'बुद्धि' (तर्क करने की क्षमता) और 'नैतिक गुण' बनाते हैं। मानवता का वास्तविक अर्थ अपने विवेक का सही उपयोग करते हुए सद्गुणी जीवन जीना है।

* **जीवन का परम लक्ष्य - आनंद (Eudaimonia):-** उनके दर्शन में मानवता का अंतिम उद्देश्य केवल जीवित रहना नहीं बल्कि एक परिपूर्ण और

आनंदमय जीवन (Eudaimonia) प्राप्त करना है। यह आनंद भौतिक सुखों से नहीं बल्कि बुद्धि के प्रयोग और नैतिक कर्तव्यों के पालन से मिलता है।

* **राज्य में विकास:-** अरस्तु का मानना था कि मानवता का पूर्ण विकास केवल एक अच्छे राज्य के भीतर ही संभव है, क्योंकि राज्य ही नागरिकों में सद्गुण, न्याय और भाईचारा विकसित करता है|

अरस्तु के अनुसार मनुष्य का अस्तित्व समुदाय (परिवार, गाँव और अंततः राज्य) के बिना अधूरा है। मानवता का अर्थ है—इन समुदायों में सक्रिय रूप से भाग लेना और अपनी बौद्धिक क्षमता का समाज के कल्याण के लिए उपयोग करना।

सुकरात के अनुसार मानवता

महान दार्शनिक सुकरात के अनुसार मानवता का मूल ज्ञान नैतिकता और आत्म-खोज में निहित है। उनका मानना था कि मनुष्य की सर्वोच्च पहचान उसकी आत्मा और विवेक है। भौतिक सुखों और बाहरी दिखावे से ऊपर उठकर सद्गुणी जीवन जीना ही सच्ची मानवता है।

सुकरात के अनुसार मानवता के प्रमुख स्तंभ निम्नलिखित हैं:-

* **सद्गुण ही ज्ञान है (Virtue is Knowledge):-** सुकरात का दृढ़ विश्वास था कि कोई भी व्यक्ति जानबूझकर बुराई या गलती नहीं करता। बुराई अज्ञानता का परिणाम है। यदि मनुष्य को सही और गलत का वास्तविक ज्ञान हो, तो वह हमेशा सही (सद्गुणी) मार्ग ही चुनेगा।

* **आत्मज्ञान आवश्यक है (Know Thyself):-** उनका सबसे प्रसिद्ध दर्शन "अपने आप को जानो" है। मानवता का अर्थ है अपने भीतर झांकना, अपनी कमियों को स्वीकार करना और निरंतर आत्म-चिंतन करना।

* **परीक्षित जीवन ही जीने योग्य है:-** सुकरात के अनुसार, एक विचारहीन या बिना विश्लेषण किया हुआ जीवन जानवरों के समान है। मानवता इसमें है कि हम जीवन के अर्थ, न्याय और अच्छाई पर लगातार सवाल उठाएं।

* **आत्मा की अमरता:-** उनका मानना था कि मनुष्य का शरीर नश्वर है, लेकिन उसकी आत्मा अमर है। भौतिकवादी लालच से ऊपर उठकर अपनी आत्मा को शुद्ध और ज्ञानी बनाना ही मानव जीवन का सर्वोच्च उद्देश्य है।

प्लेटो के अनुसार मानवता

प्लेटो (Plato) के अनुसार मानवता का अर्थ सत्य, न्याय और ज्ञान की खोज है उनके दर्शन में, मानवजाति का परम कर्तव्य अपनी आत्मा (Soul) में छिपे

दैवीय गुणों को पहचानना और एक सामंजस्यपूर्ण समाज का निर्माण करना है|

प्लेटो के अनुसार मानवता के प्रमुख आयाम निम्नलिखित हैं:

* **आत्मा का सिद्धांत:-** प्लेटो मानते थे कि मानव आत्मा में तीन गुण होते हैं—बुद्धि (Reason), साहस (Courage), और वासना (Appetite)। जब बुद्धि सर्वोच्च स्थान पर होती है, तभी सही मायने में मानवता फलती-फूलती है|

* **सद्गुण (Virtues) ही मानवता है:-** प्लेटो ने चार प्रमुख मानवीय सद्गुण बताए हैं जो हर व्यक्ति में होने चाहिए: बुद्धि/विवेक (Wisdom), साहस (Courage), संयम (Temperance) और न्याय (Justice)

* **न्यायपूर्ण समाज:-** उनके अनुसार मानवता का आधार एक आदर्श राज्य है जहाँ हर व्यक्ति अपना काम पूरी ईमानदारी से करे |जब कोई व्यक्ति दूसरों के अधिकारों में हस्तक्षेप नहीं करता तब सच्ची मानवता स्थापित होती है|

* **ज्ञान का प्रकाश (Theory of Forms):-** प्लेटो के अनुसार, भौतिक दुनिया केवल एक छलावा है वास्तविक मानवता सत्य और विचारों (Forms) के ज्ञान को प्राप्त करने में है|

प्लेटो का मानना था कि "अशिक्षित मनुष्य पशु के समान है।" इसलिए वे शिक्षा को मानवता के विकास और अज्ञानता को मिटाने का सबसे सशक्त साधन मानते थे|

डॉ. बी.आर. अंबेडकर के अनुसार मानवता

डॉ. बी.आर. अंबेडकर के अनुसार मानवता का अर्थ एक ऐसे समतामूलक समाज से है| जो स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व (Fraternity) पर आधारित हो| उनका मानना था कि सच्ची मानवता तभी संभव है जब हर व्यक्ति को जाति, लिंग या धर्म के आधार पर भेदभाव के बिना समान अवसर और गरिमा प्राप्त हो|

मानवता के प्रमुख आधार

* **स्वतंत्रता और समानता:-** बाबासाहेब के अनुसार, कोई भी समाज मानवता के मार्ग पर तब तक नहीं चल सकता जब तक वह ऊंच-नीच और छुआछूत जैसी कुरीतियों को न मिटा दे वे व्यक्ति की जन्म-आधारित पहचान की जगह उसकी योग्यता और कर्म को महत्व देते थे|

* **बंधुत्व (भाईचारा):-** उनके लिए बंधुत्व केवल एक नारा नहीं था| बल्कि यह मानव समाज के बीच का वह प्रेम और जुड़ाव है| जो लोगों को एकजुट करता है|

* **शोषण का विरोध:-** अंबेडकर ने धर्म और समाज के उस ढांचे का कड़ा विरोध किया जो मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण को उचित ठहराता है| उनके विचार में मानवता का शोषण सबसे बड़ा अमानवीय कृत्य है|

* **तर्क और विवेक:-** उन्होंने मानवतावादी दृष्टिकोण अपनाने पर जोर दिया जो अंधविश्वास के बजाय तर्क, वैज्ञानिक सोच और नैतिक मूल्यों पर आधारित हो|

सरदार वल्लभभाई पटेल के अनुसार मानवता

सरदार वल्लभभाई पटेल के अनुसार मानवता का आधार समानता, प्रेम और आपसी भाईचारा था| वे जाति, धर्म या वर्ग के आधार पर किसी भी प्रकार के भेदभाव के विरोधी थे| उनके मानवतावादी दृष्टिकोण के प्रमुख बिंदु निम्नलिखित हैं:-

*** अस्पृश्यता का विरोध:- पटेल छुआछूत को मानवता पर कलंक मानते थे| उनका मानना था कि जब तक मनुष्य में प्राण है तब तक कोई अछूत नहीं हो सकता| उन्होंने इसे ईश्वर और मानवता का तिरस्कार बताया|**

*** जातिविहीन समाज:- वे वर्ण-आधारित और जाति-आधारित भेदभाव के खिलाफ थे| उनके अनुसार, मनुष्य अपने कर्म से महान या छोटा होता है न कि जन्म से |**

*** समानता और सामाजिक न्याय:- उन्होंने संविधान निर्माण के दौरान हाशिए पर पड़े वर्गों और महिलाओं के अधिकारों तथा समान पहुंच की वकालत की| उनके अनुसार सभी नागरिकों को समान अधिकार और सम्मान प्राप्त होना चाहिए|**

* **मानवता और राष्ट्रीय एकता:-** पटेल का मानना था कि सच्ची मानवता तभी फल-फूल सकती है|जब लोग एकजुट होकर रहें वे विविधता में एकता के प्रबल समर्थक थे|

* **प्रेम और सेवा:-** उनके विचारानुसार, "कार्य ही पूजा है लेकिन हंसी ही जीवन है।" उनका पूरा जीवन वंचितों की सेवा और मानवीय मूल्यों की रक्षा के लिए समर्पित था| मानवता का आधार समानता, प्रेम और आपसी भाईचारा था| वे जाति, धर्म या वर्ग के आधार पर किसी भी प्रकार के भेदभाव के विरोधी थे|

अब्राहम लिंकन के अनुसार मानवता

अब्राहम लिंकन के अनुसार मानवता का अर्थ समानता, स्वतंत्रता और सार्वभौमिक दया है| उन्होंने माना कि कोई भी व्यक्ति दूसरे को गुलाम बनाने का अधिकार नहीं रखता| उनके विचार में असली मानवता तभी जीवित रह सकती है| जब समाज में ऊंच-नीच, क्रूरता और स्वार्थ को समाप्त कर सभी को समान अवसर और सम्मान मिले|

अब्राहम लिंकन के मानव-दर्शन और मानवता के प्रमुख स्तंभ निम्नलिखित हैं:-

* **सभी मनुष्यों की समानता:-** लिंकन का मानना था कि प्रत्येक व्यक्ति समान पैदा हुआ है। उनके लिए रंग, नस्ल या वर्ग के आधार पर भेदभाव करना अमानवीय था।

* **स्वतंत्रता का अधिकार:-** उन्होंने दास प्रथा के खिलाफ आजीवन संघर्ष किया| उनके अनुसार यदि आप दूसरों की स्वतंत्रता छीनते हैं तो आप स्वयं भी स्वतंत्र रहने के हकदार नहीं हैं|

* **सहानुभूति और क्षमा:-** लिंकन का दृष्टिकोण अत्यंत उदार था। उन्होंने गृहयुद्ध के बाद विरोधियों से बदला लेने के बजाय उन्हें क्षमा करने और एकजुट होने का मार्ग चुना| * **लोकतंत्र और जन-कल्याण:-** उनके अनुसार सच्ची मानवता तभी झलकती है जब शासन प्रणाली "जनता की, जनता के लिए और जनता द्वारा" हो।

नेल्सन मंडेला के अनुसार मानवता

नेल्सन मंडेला के अनुसार मानवता का अर्थ प्रेम, क्षमा और समानता है। उनका मानना था कि कोई भी व्यक्ति जन्म से किसी से नफरत नहीं करता। सभी मनुष्य समान गरिमा और अधिकारों के साथ पैदा होते हैं| सच्ची मानवता सभी की स्वतंत्रता का सम्मान करने और उत्पीड़क-उत्पीड़ित दोनों को बदलने में निहित है|

मंडेला के मानवता संबंधी दृष्टिकोण को इन मुख्य बिंदुओं से समझा जा सकता है:-

* 'उबंटू' (Ubuntu) का दर्शन:- वे दक्षिण अफ्रीकी 'उबंटू' विचारधारा में दृढ़ विश्वास रखते थे| जिसका अर्थ है "मैं इसलिए हूँ क्योंकि हम हैं"। यह विचार लोगों को एक-दूसरे के साथ जोड़ता है और मिल-जुलकर रहने की प्रेरणा देता है।

* घृणा पर प्रेम की विजय:- मंडेला के अनुसार घृणा स्वाभाविक नहीं है। लोग प्यार करना सीखते हैं, क्योंकि प्यार मानव हृदय के अधिक प्राकृतिक रूप से आता है। 27 साल की जेल के बाद भी उन्होंने गोरे शासकों को क्षमा कर दिया जो मानवता का सबसे बड़ा उदाहरण है|

* **मानवाधिकार और स्वतंत्रता:-** उनका प्रसिद्ध कथन है "किसी भी व्यक्ति को उसके मानवाधिकारों से वंचित करना उसकी मानवता को चुनौती देना है"। वे मानते थे कि स्वतंत्रता अविभाज्य है जब तक एक भी व्यक्ति गुलाम है तब तक पूरी मानवता जंजीरों में है|

मंडेला ने अपना जीवन रंगभेद के खिलाफ लड़ाई और एक न्यायपूर्ण, रंग-मुक्त समाज के निर्माण में समर्पित कर दिया।

राजनीतिक विचारधारा में मानवता पर मेरा दृष्टिकोण

राजनीतिक विचारधारा विचारों और सिद्धांतों का एक ऐसा समुच्चय है| जो यह तय करती है कि समाज को कैसे संगठित होना चाहिए और राजनीतिक लक्ष्य हासिल करने के लिए कौन से तरीके उचित हैं। यह सरकार, अर्थव्यवस्था और नागरिकों के अधिकारों के बीच संबंध स्थापित करती है।

राजनीतिक विचारधारा एक कम्पास (दिशा-सूचक) की तरह कार्य करती है। यह राजनेताओं और नागरिकों को यह तय करने में मदद करती है कि क्या, कब, क्यों और कैसे किया जाना चाहिए।

राजनीति के विचारधाराओं से मानव में सामाजिक मूल्यों का विकास होता है और उन सामाजिक मूल्यों से ही व्यक्ति अपने सर्वांगीण व्यक्तित्व का विकास करता है और अपने नैतिक मूल्यों का निर्माण करता है| वह नैतिक मूल्य ही एक दूसरे की सहायता, सहयोग, सहानुभूति, धैर्य, करुणा, प्रेम भाव, दया आदि सिखाते हैं| इस प्रकार से जिस देश में जिस प्रकार की राजनीतिक विचारधारा होगी उस देश के नागरिकों का व्यक्तित्व वैसा ही होगा| सभी राजनीतिक विचारधाराओं ने व्यक्तित्व के विकास के अलग-अलग तरीके बताए हैं और राष्ट्र निर्माण की बात कही हैं| इस प्रकार से हम राजनीतिक विचारधाराओं से सीखे और राष्ट्रीय प्रेम और विश्व शांति और विश्व के विकास के लिए कार्य करने की क्षमता अपने अंदर उत्पन्न करनी चाहिए|

तृतीय अध्याय

भारतीय सांस्कृतिक व साहित्यिक परिवेश में मानवता

सांस्कृतिक परिवेश में मानवता का अर्थ उस दृष्टिकोण से है जहाँ किसी भी समाज या समुदाय की कला, रीति-रिवाजों और परंपराओं को मानवीय मूल्यों और समावेश के आधार पर समझा जाता है| यह इस बात का अध्ययन है कि कैसे सांस्कृतिक विरासतें लोगों को जोड़ती हैं| और एक-दूसरे के प्रति सहानुभूति को प्रेरित करती हैं| मानव संस्कृति और समाज में मानवता के इस जुड़ाव को निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता है:-

1. **सांस्कृतिक विरासत और साझा अनुभव:-** कला, संगीत और साहित्य के माध्यम से लोग एक-दूसरे की भावनाओं और जीवन-कहानियों को समझते हैं जिससे आपसी भाईचारा बढ़ता है|

   पहचान और निरंतरता:- अमूर्त सांस्कृतिक विरासतें लोगों को अपने इतिहास और पर्यावरण से जोड़ती हैं, जो उन्हें एक विशिष्ट पहचान और निरंतरता प्रदान करती है|

2. यूनेस्को (UNESCO) द्वारा मान्यता ;- मानवता को बढ़ावा देने वाली सांस्कृतिक परंपराओं को वैश्विक स्तर पर मान्यता दी जाती है। भारत में कई ऐसी अमूर्त संस्कृतियाँ हैं जिन्हें मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर माना गया है| दीपावली प्रकाश और भाईचारे का प्रतीक यह त्योहार मानवता और उल्लास का संदेश देता है| कुटियाट्टम (संस्कृत थिएटर):- प्राचीन भारतीय परंपराएँ जो कला के माध्यम से मानवीय संवेदनाओं को व्यक्त करती हैं| अन्य धरोहरें इसमें योग, कुंभ मेला, दुर्गा पूजा, और गरबा शामिल हैं जो सामुदायिक सद्भाव को दर्शाते हैं|

3. सांस्कृतिक मानवशास्त्र (Cultural Anthropology);- यह समाज और संस्कृति के अध्ययन का वह क्षेत्र है जो मानव व्यवहार विश्वासों और रीति-रिवाजों की जाँच करता है| यह समझने में मदद करता है कि विभिन्न संस्कृतियों में मानवता के सिद्धांत कैसे काम करते हैं।सांस्कृतिक विविधता और मानवता के बारे में सांस्कृतिक मानवशास्त्र मंच पर चर्चाएं देखने को मिलती है|

भारतीय संस्कृति में मानवता का स्थान सर्वोपरि है। यह संस्कृति 'वसुधैव कुटुंबकम' (सम्पूर्ण पृथ्वी ही परिवार है) और 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' (सभी सुखी हों) के सिद्धांतों पर आधारित है। यहाँ धर्म, जाति और वर्ग से ऊपर उठकर

हर जीव में ईश्वर का अंश देखा जाता है।भारतीय जीवन दर्शन में मानवता को गहराई से समझने के लिए निम्नलिखित बिंदुओं को देखा जा सकता है|

वसुधैव कुटुंबकम:- हमारी संस्कृति संपूर्ण विश्व को एक परिवार मानती है। यहाँ केवल अपने देश के लोगों की भलाई की बात नहीं होती, बल्कि संपूर्ण मानवता के कल्याण की कामना की जाती है।

अतिथि देवो भव:- मेहमानों को ईश्वर के समान मानकर उनका सत्कार करना भारतीय परंपरा का अभिन्न अंग है। यह दूसरों के प्रति प्रेम और सम्मान की भावना को दर्शाता है।

त्याग और परोपकार: भारत में दान, त्याग और दूसरों की सेवा को सबसे बड़ा धर्म माना गया है। 'परोपकाराय पुण्याय' का भाव यहाँ के जन-जन के मन में रचा-बसा है।

अहिंसा और करुणा: महात्मा बुद्ध, महावीर स्वामी से लेकर महात्मा गांधी तक, सभी ने अहिंसा और करुणा का मार्ग दिखाया है। सभी प्राणियों के साथ दया का भाव रखना मानवता की सबसे बड़ी पहचान है।

आध्यात्मिकता और समानता:- भारतीय ज्ञान परंपरा सिखाती है कि सभी मनुष्य समान हैं| क्योंकि सबके भीतर एक ही चेतना (आत्मा) विद्यमान है। प्राचीन काल से ही भारतीय विचारों ने पूरे विश्व को प्रेम और बंधुत्व का संदेश दिया है। अखिल भारतीय गायत्री परिवार के अनुसार भारतीय संस्कृति विश्व की पहली और सर्वोच्च संस्कृतियों में से एक है| जिसका मूल उद्देश्य ही मानव कल्याण है। धर्म और आधुनिकता से ऊपर इंसानियत ही भारत की असली पहचान है।

भारतीय संस्कृति विश्व की सबसे प्राचीन और समृद्ध संस्कृतियों में से एक है, जिसका मूल उद्देश्य संपूर्ण मानवता का कल्याण, आंतरिक शांति और सर्वांगीण विकास है।

मानव कल्याण में इसके प्रमुख योगदान निम्नलिखित हैं:-

वसुधैव कुटुंबकम की भावना:- 'वसुधैव कुटुंबकम' (अर्थात 'संपूर्ण पृथ्वी एक परिवार है') भारतीय संस्कृति का मूल मंत्र है। यह पूरी दुनिया को भाईचारे, प्रेम और सहिष्णुता के साथ रहने का संदेश देता है।

योग और आयुर्वेद:- भारत की प्राचीन ऋषियों की देन—योग और आयुर्वेद ने आज संपूर्ण विश्व को निरोगी और स्वस्थ जीवन शैली अपनाने का मार्ग दिखाया है।

नैतिक और मानवीय मूल्य:- भारतीय संस्कृति में सत्य, अहिंसा, दया, परोपकार और सेवा जैसे मानवीय गुणों को सर्वोच्च स्थान दिया गया है। ये मूल्य समाज में अपराध कम करने और मानवीय संबंधों को मजबूत करने में मदद करते हैं।

प्रकृति और पर्यावरण संरक्षण:- हमारी संस्कृति में नदियों, पर्वतों, पेड़ों और सूर्य को ईश्वर का रूप मानकर पूजा जाता है। यह पारिस्थितिकी तंत्र (Ecology) के संरक्षण और पर्यावरण संतुलन का एक स्थायी समाधान है।

आध्यात्मिकता और मानसिक शांति:- भारतीय जीवन दर्शन का मुख्य केंद्र बिंदु केवल भौतिक विकास नहीं, बल्कि आध्यात्मिक और मानसिक शांति

है। यह मनुष्य को भौतिकवादी दौड़ में तनाव से मुक्त होकर संतोष के साथ जीवन जीना सिखाता है।

भारतीय संस्कृति केवल एक विचारधारा नहीं बल्कि एक शाश्वत जीवन शैली है। जो आज भी वैश्विक शांति और एकता के लिए अत्यंत प्रासंगिक है।

भारतीय संस्कृति केवल एक विचारधारा नहीं बल्कि एक शाश्वत जीवन शैली है जो आज भी वैश्विक शांति और एकता के लिए अत्यंत प्रासंगिक है।

भारत दुनिया के सबसे आकर्षक और जटिल देशों में से एक है। यह धार्मिक विविधता से भरपूर देश है, जहाँ 1.5 अरब से अधिक लोग विभिन्न धर्मों का पालन करते हैं। हिंदू धर्म यहाँ का प्रमुख धर्म है, लेकिन यहाँ मुसलमानों, ईसाइयों, सिखों और बौद्धों की भी बड़ी आबादी है। भारत समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का भी घर है, जिसमें पारंपरिक संगीत, नृत्य, कला और व्यंजन शामिल हैं।

सांस्कृतिक और धार्मिक विविधता

भारत धार्मिक और सांस्कृतिक विविधता का देश है। भारत में चार प्रमुख धर्म प्रचलित हैं - हिंदू धर्म, सिख धर्म, इस्लाम और ईसाई धर्म। इन चार प्रमुख धर्मों के अंतर्गत अनेक छोटे धर्म और संप्रदाय भी हैं। यह विविधता भारत की विशालता और इतिहास को दर्शाती है। भारत विश्व की कुछ महान सभ्यताओं मे से एक है।

भारत धार्मिक और सांस्कृतिक विविधता से भरपूर देश है। यहाँ कोई एक प्रमुख धर्म या संस्कृति नहीं है। बल्कि यहाँ विभिन्न धर्मों और परंपराओं का

समृद्ध ताना-बाना बुना गया है जो सदियों से एक साथ विद्यमान हैं। भारत धार्मिक सहिष्णुता का देश है|जहाँ विभिन्न धर्मों के लोग एक साथ रह सकते हैं और पूजा-अर्चना कर सकते हैं। भारत के धार्मिक और सांस्कृतिक मूल्य इस देश को इतना विशिष्ट बनाते हैं।

मानवता के उत्थान और विकास में भारतीय संस्कृति का योगदान अतुलनीय और सार्वभौमिक है। इसका मूल आधार केवल एक धर्म या क्षेत्र तक सीमित न होकर, संपूर्ण विश्व को एक परिवार मानने वाली विशाल विचारधारा पर टिका है। भारतीय संस्कृति और सभ्यता ने मानवता को आकार देने में निम्नलिखित प्रमुख योगदान दिए हैं| वसुधैव कुटुंबकम और विश्व बंधुत्व: भारत ने हमेशा "सर्वे भवन्तु सुखिनः" (सभी सुखी हों) के मूल मंत्र का पालन किया है। यह भावना संपूर्ण विश्व को एक परिवार मानकर प्रेम और सद्भाव से रहने का संदेश देती है।अहिंसा और शांति का संदेश भगवान बुद्ध और महावीर स्वामी जैसे संतों ने विश्व को अहिंसा, करुणा और शांति का मार्ग दिखाया। आज भी भारत की विदेश नीति और सांस्कृतिक मूल्य इसी शांति के सिद्धांत पर आधारित हैं।आध्यात्मिक ज्ञान और योग भारतीय संस्कृति ने भौतिकता से परे जाकर मनुष्य को आत्म-ज्ञान व्

जीने का तरीका सीखता है।

हमारी सांस्कृतिक विरासत अत्यंत प्रगाढ है| संस्कृति किसी भी देश जाति और समुदाय की आत्मा होती है। संस्कृति से ही देश, जाति या समुदाय के उन समस्त संस्कारों का बोध होता है| जिनके सहारे वह अपने आदर्शों, जीवन मूल्यों, आदि का निर्धारण करता है। अत; संस्कृति का साधारण अर्थ होता है- संस्कार, सुधार, परिष्कार, शुद्धि, सजावट आदि।

आज के समय में सभ्यता और संस्कृति को एक-दूसरे का पर्याय समझा जाने लगा है| जिसके फलस्वरूप संस्कृति के संदर्भ में अनेक भ्रांतियाँ पैदा हो गई हैं। लेकिन वास्तव में संस्कृति और सभ्यता अलग-अलग होती है।

सभ्यता का संबंध हमारे बाहरी जीवन के ढंग से होता है| यथा- खान-पान, रहन-सहन, बोलचाल आदि जबकि संस्कृति का संबंध हमारी सोच, चिंतन और विचारधारा से होता है।

संस्कृति का क्षेत्र सभ्यता से कहीं अधिक व्यापक और गहन होता है। सभ्यता का अनुकरण किया जा सकता है| लेकिन संस्कृति का अनुकरण नहीं किया जा सकता है ।

उपर्युक्त अंतर से स्पष्ट है कि दोनों के क्रियाकलाप अलग-अलग हैं| और दोनों परस्पर जुड़े हुए भी हैं। सभ्यता में मनुष्य के राजनीतिक, प्रशासनिक, आर्थिक, प्रौद्योगिकीय व दृश्य कला रूपों का प्रदर्शन होता है| जो जीवन को सुखमय बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

जबकि संस्कृति में कला, विज्ञान, संगीत, नृत्य और मानव जीवन की उच्चत्तर उपलब्धियाँ सम्मिलित हैं। अतः यही कहा जा सकता है कि सभ्यता वह है| जो हम बनाते हैं तथा संस्कृति वह है जो हम हैं।

भारतीय संस्कृति का प्राचीन स्वरूप:-

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है। यह माना जाता है कि भारतीय संस्कृति यूनान, रोम, मिस्र, सुमेर और चीन की संस्कृतियों के समान ही प्राचीन है। कई भारतीय विद्वान तो भारतीय संस्कृति को विश्व की सर्वाधिक प्राचीन संस्कृति मानते हैं।

वसुधैव कुटुंबकम:-

भारतीय संस्कृति का सर्वाधिक व्यवस्थित रूप हमें सर्वप्रथम वैदिक युग में प्राप्त होता है। वेद विश्व के प्राचीनतम ग्रंथ माने जाते हैं। प्रारंभ से ही भारतीय संस्कृति अत्यंत उदात्त, समन्वयवादी, सशक्त एवं जीवंत रही हैं| जिसमें जीवन के प्रति वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा आध्यात्मिक प्रवृत्ति का अद्भुत समन्वय पाया जाता है।

भारतीय विचारक आदिकाल से ही संपूर्ण विश्व को एक परिवार के रूप में मानते रहे हैं इसका कारण उनका उदार दृष्टिकोण है।

हमारे विचारकों की 'उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुंबकम' के सिद्धांत में गहरी आस्था रही है। वस्तुत शारीरिक, मानसिक और आत्मिक शक्तियों का विकास ही संस्कृति की कसौटी है। इस कसौटी पर भारतीय संस्कृति पूर्ण रूप से उतरती है।

प्राचीन भारत में शारीरिक विकास के लिये व्यायाम, यम, नियम, प्राणायाम, आसन ब्रह्मचर्य आदि के द्वारा शरीर को पुष्ट किया जाता था । लोग दीर्घ जीवी होते थे।

आश्रम व्यवस्था:

आश्रम व्यवस्था का पालन करते हुए धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति भारतीय संस्कृति का मूल मंत्र रहा है।

प्राचीन भारत के धर्म, दर्शन, शास्त्र, विद्या, कला, साहित्य, राजनीति, समाजशास्त्र इत्यादि में भारतीय संस्कृति के सच्चे स्वरुप को देखा जा सकता है।

मानव संस्कृति:

यह संस्कृति ऐसे सिद्धांतों पर आश्रित है जो प्राचीन होते हुए भी नये हैं। ये सिद्धांत किसी देश या जाति के लिये नहीं अपितु समस्त मानव जाति के

कल्याण के लिये हैं। इस दृष्टि से भारतीय संस्कृति को सच्चे अर्थ में मानव संस्कृति कहा जा सकता है।

मानवता के सिद्धांतों पर स्थित होने के कारण ही तमाम आघातों के बावजूद भी यह संस्कृति अपने अस्तित्व को सुरक्षित रख सकी है।

यूनानी, पार्शियन, शक आदि विदेशी जातियों के हमले, मुगलों और अंग्रेजी साम्राज्यों के आघातों के बीच भी यह संस्कृति नष्ट नहीं हुई। अपितु प्राणशीलता के अपने स्वभावगत गुण के कारण और अधिक पुष्ट एवं समृद्ध हुई।

भारतीय संस्कृति का वर्तमान स्वरूप और महत्त्व:-

भारतीय संस्कृति का नूतन आयाम ब्रिटिश साम्राज्य की नींव के साथ प्रारंभ हुआ। इस काल में सभ्यता ने संस्कृति को दबाने की चेष्टा की अतः संस्कृति का यथार्थ स्वरूप उभर नहीं सका।

इस युग में सामाजिक आचार-विचार पर पश्चिमी संस्कृति का प्रभाव पड़ा। संयुक्त कुटुंब प्रथा के स्थान पर परिवारों का पृथक्करण होने लगा।

धर्मनिरपेक्षता के सिद्धांत ने धर्म को पीछे धकेल दिया। विज्ञान ने ज्ञान के अपेक्षित स्वरूप की अपेक्षा कर दी भौतिकवाद उभरकर सामने आया और भारतीयों का सांस्कृतिक दृष्टिकोण अपने मूल लक्ष्य से भटक गया।

आधुनिकतावाद की अवधारणा का समाज में आना आसान हो गया। वैश्वीकरण और आधुनिकरण के मध्य में गहरा संबंध है। जब भारतीय संस्कृति का स्वरूप आधुनिक हो गया तब निश्चित ही संस्कृति किसी भी देश, जाति और समुदाय की आत्मा होती है। संस्कृति से ही देश, जाति या समुदाय के उन समस्त संस्कारों का बोध होता है| जिनके सहारे वह अपने

आदर्शों, जीवन मूल्यों, आदि का निर्धारण करता है। अतः संस्कृति का साधारण अर्थ होता है- संस्कार, सुधार, परिष्कार, शुद्धि, सजावट आदि।

आज के समय में सभ्यता और संस्कृति को एक-दूसरे का पर्याय समझा जाने लगा है| जिसके फलस्वरूप संस्कृति के संदर्भ में अनेक भ्रांतियाँ पैदा हो गई हैं। लेकिन वास्तव में संस्कृति और सभ्यता अलग-अलग होती है।

सभ्यता का संबंध हमारे बाहरी जीवन के ढंग से होता है| यथा खान-पान, रहन-सहन, बोलचाल आदि जबकि संस्कृति का संबंध हमारी सोच, चिंतन और विचारधारा से होता है।

संस्कृति का क्षेत्र सभ्यता से कहीं अधिक व्यापक और गहन होता है। सभ्यता का अनुकरण किया जा सकता है लेकिन संस्कृति का अनुकरण नहीं किया जा सकता है ।

उपर्युक्त अंतर से स्पष्ट है| कि दोनों के क्रियाकलाप अलग-अलग हैं और दोनों परस्पर जुड़े हुए भी हैं। सभ्यता में मनुष्य के राजनीतिक, प्रशासनिक, आर्थिक, प्रौद्योगिकीय व दृश्य कला रूपों का प्रदर्शन होता है| जो जीवन को सुखमय बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

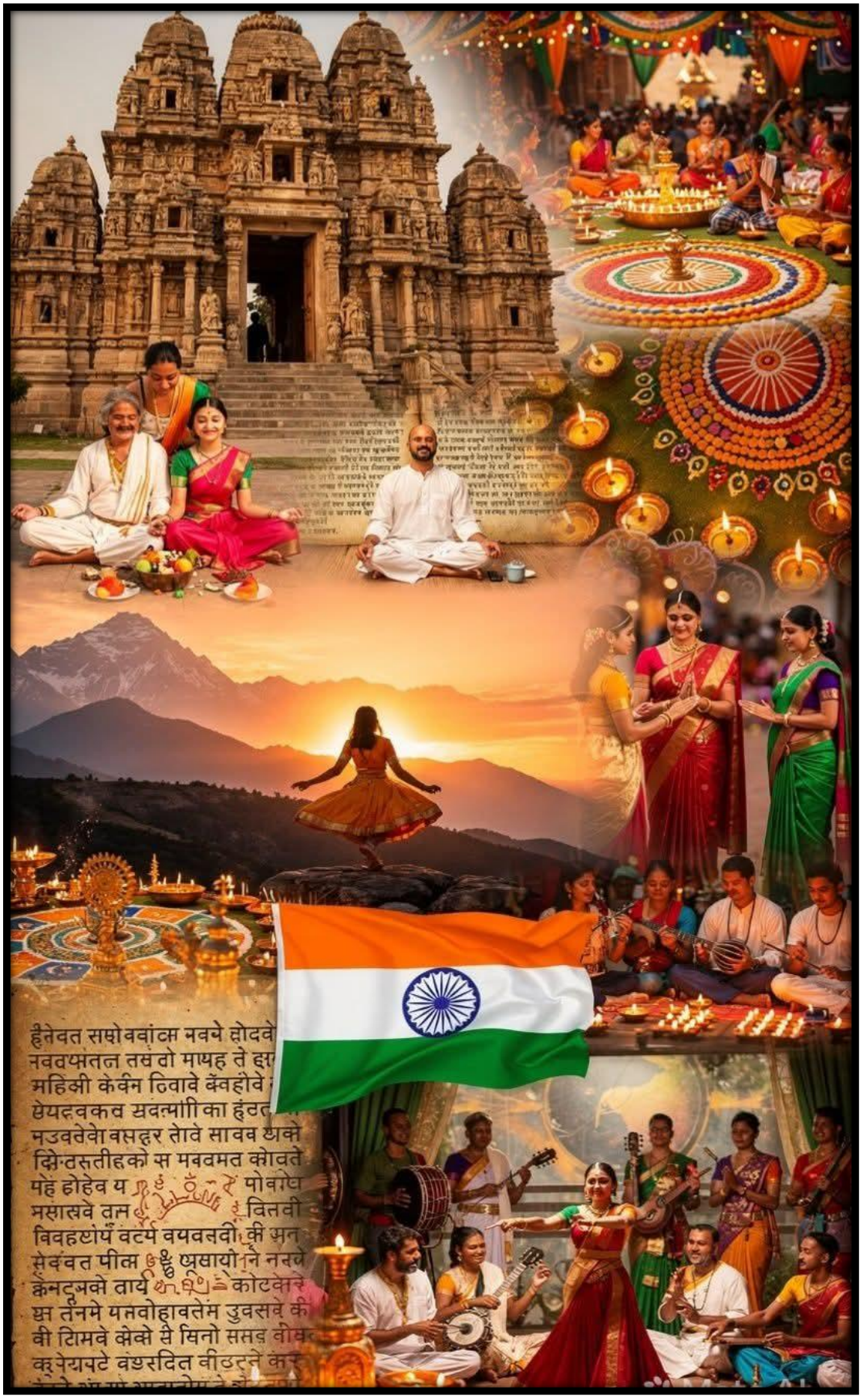
जबकि संस्कृति में कला, विज्ञान, संगीत, नृत्य और मानव जीवन की उच्चत्तर उपलब्धियाँ सम्मिलित हैं। अतः यही कहा जा सकता है कि सभ्यता वह है जो हम बनाते हैं तथा संस्कृति वह है जो हम हैं।

भारतीय संस्कृति का प्राचीन स्वरूप:-

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है। यह माना जाता है कि भारतीय संस्कृति यूनान, रोम, मिस्र, सुमेर और चीन की संस्कृतियों

के समान ही प्राचीन है। कई भारतीय विद्वान तो भारतीय संस्कृति को विश्व की सर्वाधिक प्राचीन संस्कृति मानते हैं।

अतः यह स्पष्ट रूप से उल्लेखनीय है कि भारत में कभी भी एक ही संस्कृति पूर्ण रूप से व्याप्त नहीं रही और न ही शायद किसी भी बड़े प्रदेश में कभी एक ही संस्कृति रही है। इस देश में आध्यात्मिक संस्कृति की प्रमुखता रही है। अतः संस्कृति में बदलाव निरंतर रहेगा।



भारतीय संस्कृति में मानवता पर मेरे विचार

भारतीय संस्कृति व सभ्यता विश्व की सर्वाधिक प्राचीन एवं समृद्ध संस्कृति व सभ्यता है। इसे विश्व की सभी संस्कृतियों की जननी माना जाता है। जीने की कला हो, विज्ञान हो या राजनीति का क्षेत्र भारतीय संस्कृति का सदैव विशेष स्थान रहा है। अन्य देशों की संस्कृतियाँ तो समय की धारा के साथ-साथ नष्ट होती रही हैं किंतु भारत की संस्कृति व सभ्यता आदिकाल से ही अपने परंपरागत अस्तित्व के साथ अजर-अमर बनी हुई|

हमारे यहां बहुत सारे संस्कृतियों आई और वह संस्कृतियों भी भारतीय संस्कृति में विलय होती गई| आज यहां प्रदेश में अलग-अलग संस्कृति है और हर व्यक्ति को शिक्षा व संस्कृति का आधुनिक अधिकार भी प्राप्त है| भारतीय संस्कृति में विश्व में एकता वह मानव कल्याण की बात देखने को मिलती है| अनेक धर्म का संदेश है इसमें जीवो पर दया की बात कही गई है| बुरे विचारों को त्यागने की बात की गई है इसलिए कहा जाता है| कि भारतीय संस्कृति सब संस्कृतियों में बड़ी है |इसमें मानव के कल्याण की बात प्रमुखता से रखी गई है| भारतीय संस्कृति हमें परोपकार की भावना सिखाती है| अतिथि देवो भव; ऐसी भावना केवल भारतीय संस्कृति में ही पाई जाती है| दान पुण्य करके मानव का कल्याण करने की भावना भारतीय संस्कृति में पाई जाती है प्रेम और सम्मान करुणा अहिंसा आदि का मार्ग पर चलकर ही मानव का कल्याण हो सकता है|

यह परंपरा में भारतीय संस्कृति में देखने को मिलती है| अंत में भारतीय संस्कृति का मूल मंत्र है| विश्व का कल्याण

भारतीय साहित्यिक परिवेश में मानवता

मानवता को साहित्य की आवश्यकता तब तक बनी रहेगी जब तक मानवीय सभ्यता का अस्तित्व है। इसके पीछे निम्नलिखित मुख्य कारण हैं:-

साहित्य की शाश्वत आवश्यकता के कारण

साहित्य मानव की उस सहज प्रवृत्ति से उत्पन्न होता है| जो उसे अपनी भावनाओं, विचारों और अनुभवों को व्यक्त करने की प्रेरणा देती है। यह केवल कलात्मक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि मानवीय चेतना की आधारभूत आवश्यकता है।

साहित्य समाज की समस्याओं, मूल्यों और आदर्शों का प्रतिबिंब है। यह सामाजिक परिवर्तन का माध्यम भी है और नैतिक मार्गदर्शन भी प्रदान करता है। जब तक समाज में सुधार की आवश्यकता रहेगी तब तक साहित्य की भूमिका महत्वपूर्ण रहेगी।

साहित्य मानव की मानसिक और भावनात्मक आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। यह व्यक्ति को सांत्वना, प्रेरणा और आनंद प्रदान करता है तथा जीवन के संघर्षों में सहायक होता है।

साहित्य किसी भी राष्ट्र या समुदाय की सांस्कृतिक धरोहर का संरक्षक होता है। यह पीढ़ी-दर-पीढ़ी मानवीय मूल्यों और परंपराओं का स्थानांतरण करता है।साहित्य मानवीय अनुभवों का विशाल भंडार है। यह जीवन की जटिलताओं को समझने और उनसे निपटने के लिए आवश्यक दृष्टिकोण प्रदान करता है।

आधुनिक संदर्भ में प्रासंगिकता

वर्तमान डिजिटल युग में साहित्य के माध्यम बदले हैं| परंतु इसकी आवश्यकता कम नहीं हुई है। नई तकनीकें साहित्य को नए रूपों में प्रस्तुत करने के साधन मात्र हैं।

निष्कर्ष

साहित्य मानवता की एक मौलिक आवश्यकता है जो मानवीय संवेदनाओं, बौद्धिक चेतना और सामाजिक व्यवस्था से अभिन्न रूप से जुड़ी है। अतः मानवता को साहित्य की आवश्यकता अनंतकाल तक बनी रहेगी| केवल इसके रूप और माध्यम समयानुसार परिवर्तित होते रहेंगे।

भारतीय साहित्य में 'मानवता' (मानववाद) का अर्थ केवल मनुष्य मात्र से प्रेम नहीं, बल्कि संपूर्ण सृष्टि के प्रति करुणा, सहिष्णुता और नैतिक मूल्यों का समावेश है| प्राचीन काल से लेकर आधुनिक युग तक यह साहित्य प्रेम, अहिंसा और सामाजिक सद्भाव का संदेश देता है| भारतीय साहित्य में मानवता की विभिन्न अभिव्यक्तियों को निम्नलिखित रूप से समझा जा सकता है:-

1 . प्राचीन एवं वैदिक साहित्य (आध्यात्मिक मानववाद)वसुधैव कुटुंबकम:- भारतीय साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता है संपूर्ण पृथ्वी को एक परिवार मानना इसमें 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' (सभी सुखी हों) की सार्वभौमिक कामना की गई है। महाकाव्य रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्य व्यक्तिगत कर्तव्य, न्याय और सत्य के मार्ग का अनुसरण करते हुए मानवीय मूल्यों की स्थापना करते हैं।

2 . मध्यकालीन साहित्य (भक्ति और सूफी आंदोलन)समानता का संदेश:- मध्यकाल में कबीर, तुलसी, सूरदास, मीरा और नानक जैसे संतों ने जाति, धर्म और वर्ण के भेदों को मिटाकर मानवता का संदेश दिया सूफी साहित्य सूफी कवियों ने प्रेम और ईश्वरीय भ्रातृत्व (Brotherhood) के माध्यम से मानव-मानव के बीच की दीवारों को तोड़ा|

3 . आधुनिक काल (सामाजिक चेतना और यथार्थ)साहित्य और यथार्थ:- मुंशी प्रेमचंद की कहानियों (जैसे 'ईदगाह', 'सद्गति') ने शोषितों और दलितों के जीवन का यथार्थ चित्रण कर मानवतावादी दृष्टिकोण अपनाया छायावाद और राष्ट्रीयता जयशंकर प्रसाद और सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' जैसे कवियों की रचनाओं में मानवीय पीड़ा के प्रति गहरी संवेदना दिखाई देती है। इसके अलावा रवींद्रनाथ टैगोर का साहित्य स्वतंत्रता और मानवीय गरिमा का पर्याय है|

4 . भारतीय साहित्य की प्रमुख मानवीय विशेषताएँ अहिंसा और करुणा महात्मा बुद्ध और जैन धर्म के साहित्य से लेकर आधुनिक साहित्य तक अहिंसा को परम धर्म माना गया है| प्रकृति और जीवंतता यहाँ मनुष्य और प्रकृति के बीच अटूट संबंध स्थापित किया गया है। मनुष्य को प्रकृति का स्वामी नहीं बल्कि उसका अभिन्न अंग माना गया है।

भारतीय साहित्यकारों ने अपनी लेखनी के माध्यम से हमेशा मानवीय संवेदनाओं सामाजिक समरसता और प्रेम को सर्वोपरि रखा है। उनकी कलम से निकली मानवता की यह अमर गाथा हमें सिखाती है कि साहित्य का असली उद्देश्य समाज को जोड़ना और हर व्यक्ति के भीतर 'इंसानियत' को जगाना है।

प्रमुख साहित्यकारों की दृष्टि में मानवता

1 . मुंशी प्रेमचंद (कथा सम्राट)प्रेमचंद जी का साहित्य दलितों, शोषितों और आम आदमी की पीड़ा का सच्चा दस्तावेज है। उनकी कहानियों और उपन्यासों जैसे गोदान और कफन में वंचितों के प्रति गहरी मानवीय संवेदना झलकती है। वे इंसान को उसकी आर्थिक या सामाजिक स्थिति से नहीं बल्कि उसकी भावनाओं से तौलते हैं|

3. रवीन्द्रनाथ टैगोर (गुरुदेव)गुरुदेव के लिए मानवता किसी एक देश या जाति तक सीमित नहीं थी। उनका साहित्य विश्व-बंधुत्व का संदेश देता है। उन्होंने अपनी कविताओं और 'गीतांजलि' में यह बात कही है|

साहित्य में मानवतावाद एक ऐसा दृष्टिकोण है| जो ईश्वरीय या अलौकिक सत्ता के बजाय मनुष्य, उसके मूल्यों, भावनाओं और संघर्षों को केंद्र में रखता है। यह साहित्य को जाति, धर्म और वर्ग की संकीर्णताओं से ऊपर उठाकर संपूर्ण मानव जाति के कल्याण और उसकी गरिमा का संदेश देता है।साहित्य में मानवतावाद की मुख्य विशेषताएं और महत्व निम्नलिखित हैं मानवीय अनुभव की केंद्रीयता इसके तहत साहित्य में मानव जीवन को दर्पण माना जाता है। रचनाकार मनुष्य के सुख, दुख, प्रेम और संघर्षों को गहराई से चित्रित करते हैं।सार्वभौमिक मूल्यों पर जोर मानवतावादी साहित्य प्रेम, न्याय, सत्य और नैतिकता जैसे शाश्वत विषयों को बढ़ावा देता है। यह मनुष्य और मनुष्य

के बीच भाईचारे की भावना जगाता है। शोषण और असमानता का विरोधकरता है| मानवतावादी रचनाएँ हमेशा शोषितों, पीड़ितों और उपेक्षितों की आवाज बनती हैं।

यह साहित्यिक रचनाओं में मनुष्य उसके मूल्य बहाने संघर्ष मूल केंद्र में रहे साहित्य ने जाति धर्म वर्ण की संकीर्ण से ऊपर उठकर मानव जाति कल्याण व गरिमा का संदेश दिया है भारतीय साहित्य में मनुष्य के सुख-दुख प्रेम और संघर्षों की गहराई को चित्र किया है और सर्वप्रथम मूल्यों को जोड़ दिया है साहित्य में प्रेम न्याय सत्य एकता जैसे मूल्यों को आगे बढ़ाया है मनुष्य किस प्रकार आपस में मेल जोल के साथ रह सकता है इसी भावना के साथ में कार्य किया है और अनेक साहित्यिक रचनाओं को पढ़कर मनुष्य के अंदर जो भेदभाव था असमानता था उसको विरोध करने की क्षमता जागृत हुई है| और वह पीढियों से आ रही भेदभाव को मिटाने के लिए तैयार हुआ है इसलिए भारतीय साहित्य का मानवता के विकास में बहुत बड़ा योगदान है|

साहित्यिक रचनाओं में मनुष्य उसके मूल्यों भावनाओं और संघर्ष का मूल केंद्र रहा हैं| साहित्य ने जाति धर्म वर्ण की संकीर्ण से ऊपर उठकर मानव जाति कल्याण व गरिमा का संदेश दिया है| भारतीय साहित्य में मनुष्य के सुख-दुख प्रेम और संघर्षों की गहराई को चित्र किया है| और सर्वप्रथम मूल्यों को जोर दिया है| साहित्य में प्रेम न्याय सत्य और नैतिकता जैसे मूल्यों को आगे बढ़ाया है| मनुष्य किस प्रकार आपस में मेल जोल के साथ रह सकता है| इसी भावना के साथ में कार्य किया है और अनेक साहित्यिक रचनाओं को पढ़कर मनुष्य के अंदर जो भेदभाव व असमानता थी| उसका विरोध करने की क्षमता जागृत हुई |

चतुर्थ अध्याय

भारतीय सामाजिक परिवेश में मानवता

भारतीय सामाजिक परिवेश में मानवता (Humanity) का अर्थ केवल दया या परोपकार तक सीमित नहीं है| बल्कि यह हमारे प्राचीन दर्शन संयुक्त परिवार की संस्कृति और 'वसुधैव कुटुंबकम' की भावना में गहराई से निहित है| भारतीय समाज में मानवीय मूल्यों और परिवेश को निम्नलिखित प्रमुख आधारों पर समझा जा सकता है|

1. 'वसुधैव कुटुंबकम' और 'सर्वजन हिताय' भारतीय संस्कृति में पूरी दुनिया को एक परिवार (कुटुंब) माना गया है हमारे यहाँ वेदों से लेकर आधुनिक समाज सुधारकों तक सभी ने मानवता को सर्वोच्च धर्म माना है यहाँ "अतिथि देवो भव" की परंपरा बताती है कि आगंतुक का सम्मान ईश्वर के समान करना ही सच्ची मानवता है।

2. संयुक्त परिवार और पारस्परिक सहयोग भारतीय सामाजिक परिवेश की नींव संयुक्त परिवार (Joint Family) व्यवस्था पर टिकी है यहाँ व्यक्ति से अधिक समाज और परिवार को महत्व दिया जाता है। संकट के समय पूरा परिवार (चाचा, ताऊ, चचेरे भाई-बहन) एक साथ खड़ा होता है जो कि मानवीय एकता और परस्पर निर्भरता का एक उत्कृष्ट उदाहरण है|

3.विविधता में एकता (Unity in Diversity)भारत अपनी भाषा, धर्म और जातियों की विविधता के बावजूद एक सूत्र में बंधा हुआ देश है| अलग-अलग त्योहारों (जैसे दीपावली, ईद, क्रिसमस) को मिल-जुलकर मनाना और एक-दूसरे के धर्मों का सम्मान करना भारतीय मानवता का सबसे बड़ा प्रमाण है|

4. त्याग और अपरिग्रह का सिद्धांत हमारे वैदिक साहित्य में 'अपरिग्रह' (आवश्यकता से अधिक संपत्ति का संचय न करना) का पाठ पढ़ाया गया है| इसका सीधा अर्थ यह है कि समाज के वंचित और जरूरतमंद लोगों की भलाई के लिए त्याग करना ही मानवता है|

5. आधुनिक युग में चुनौतियाँ और परिवर्तन आज के वैश्वीकरण और औद्योगीकरण (Industrialization) के दौर में भारतीय समाज तेजी से बदल रहा है संयुक्त परिवार टूटकर एकल परिवारों (Nuclear Families) में बदल रहे हैं| इसके बावजूद, आधुनिक संचार माध्यमों, स्वयंसेवी संस्थाओं (NGOs) और सामाजिक आंदोलनों के जरिए लोग एक-दूसरे की मदद के लिए आगे आ रहे हैं आज की युवा पीढ़ी सामाजिक परिवर्तन के इस दौर में भी आधुनिकता और पारंपरिक मानवीय मूल्यों (जैसे बड़ों का सम्मान, अतिथि सत्कार) के बीच संतुलन बनाए रखने का प्रयास कर रही है।

मानव कल्याण, आपसी भाईचारे और एक समतामूलक समाज के निर्माण में दान-पुण्य का योगदान अतुलनीय है। यह न केवल अभावग्रस्तों को सहायता

प्रदान करता है बल्कि देने वाले के मन में संतोष और मानवीय मूल्यों को भी जागृत करता है।

मानवता के उत्थान में दान-पुण्य के प्रमुख योगदान निम्नलिखित हैं

1. सामाजिक समानता और सहायता जरूरत मंदों का सहारा:- दान-पुण्य का सबसे सीधा लाभ समाज के वंचित, गरीब और असहाय वर्गों को मिलता है। भोजन, वस्त्र और चिकित्सा के रूप में दिया गया दान लोगों के जीवन स्तर को ऊपर उठाता है।
2. आर्थिक खाई को कम करना:- स्वेच्छा से किया गया धन का दान अमीरी और गरीबी के बीच की दूरी को पाटने में मदद करता है।
3. शिक्षा और सशक्तिकरणविद्या दान:- शास्त्रों और महात्माओं के अनुसार, ज्ञान और शिक्षा का दान सबसे बड़ा दान है। यह किसी व्यक्ति के भविष्य को संवारकर उसे आत्मनिर्भर बनाता है।
4. कौशल विकास:- शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण में दान देने से युवाओं को रोजगार के बेहतर अवसर मिलते हैं।
5. स्वास्थ्य और जीवन रक्षाचिकित्सा दान:- गंभीर रूप से बीमार और निर्धन लोगों के इलाज में योगदान देना मानवता की सबसे बड़ी सेवा है। इससे किसी का जीवन बचाया जा सकता है।
6. अन्नदान और रक्तदान:- यह जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करता है।
7. चारित्रिक और मनोवैज्ञानिक विकास अहंकार का नाश:- दान देने से व्यक्ति के मन से लोभ, अहंकार और स्वार्थ की भावना दूर होती है जिससे हृदय शुद्ध होता है।
8. आत्मिक शांति:- दूसरों के चेहरे पर मुस्कान लाने से मन को गहरी संतुष्टि, खुशी और मानसिक शांति मिलती है।

9. **नैतिक मूल्यों की स्थापनासहानुभूति (Empathy):- दान हमें दूसरों के दुख को समझने और उनके साथ खड़े होने की प्रेरणा देता है।साझा मानवता यह हमें सिखाता है| कि हम सब एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं| और सामूहिक प्रयासों से ही एक बेहतर समाज बन सकता है।दान केवल धन का ही नहीं होता, बल्कि यह आपका समय, श्रम, ज्ञान और सकारात्मक विचार भी हो सकता है।**

धर्मशाला ('धर्म का आश्रय') का मानवता के लिए योगदान निस्वार्थ सेवा, एकता और परोपकार का प्रतीक है। यह समाज के सभी वर्गों को बिना किसी भेदभाव के जोड़ती है और मानवीय मूल्यों को जीवंत रखती है।

मानवता के विकास और कल्याण में धर्मशालाओं का योगदान निम्नलिखित है:

1. **सस्ता और सुलभ आश्रय:- तीर्थयात्रियों, यात्रियों और जरूरतमंदों को कम खर्च या मुफ्त में सुरक्षित आवास प्रदान करना।**
2. **चिकित्सा सहायता:- बड़े अस्पतालों या तीर्थस्थलों के पास स्थित धर्मशालाएँ, दूर-दराज से आए मरीजों और उनके तीमारदारों के ठहरने का मुख्य साधन हैं। उदाहरण के लिए, मुंबई की 'संत गाडगे महाराज धर्मशाला' जैसी संस्थाएं मरीजों को किफायती आवास देती हैं। सामाजिक और सामुदायिक कार्यक्रम: धर्मशालाओं का उपयोग अक्सर रक्तदान शिविर सामुदायिक विवाह, नि:शुल्क चिकित्सा जांच शिविर, और आपदा राहत सामग्री वितरण जैसे मानवीय कार्यों के लिए किया जाता है।**
3. **सांस्कृतिक और आध्यात्मिक केंद्र:- ये स्थान लोगों को अपनी जड़ों, संस्कृति और आध्यात्मिक शिक्षाओं से जोड़ते हैं जिससे समाज में नैतिक मूल्यों और भाईचारे की भावना को बढ़ावा मिलता है।धर्मशालाएं**

वास्तविक अर्थों में 'वसुधैव कुटुंबकम' (पूरी दुनिया एक परिवार है) के विचार को साकार करती

धार्मिक ट्रस्ट (Religious Trust) समाज की भलाई संस्कृति के संरक्षण और आध्यात्मिक विकास का एक प्रमुख माध्यम हैं। ये धर्मार्थ कार्यों के जरिए करोड़ों लोगों को सहायता प्रदान करते हैं

।धार्मिक ट्रस्टों का समाज और देश के विकास में योगदान निम्नलिखित है:

1. **शिक्षा का प्रसार:-** कई बड़े धार्मिक ट्रस्ट स्कूल, कॉलेज और तकनीकी संस्थान चलाते हैं। इसके तहत गरीब और जरूरतमंद छात्रों को मुफ्त या बेहद कम फीस पर उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा और छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है।
2. **स्वास्थ्य सेवाएं:-** इन ट्रस्टों द्वारा अस्पताल, औषधालय और मोबाइल क्लिनिक चलाए जाते हैं। मरीजों को मुफ्त इलाज, दवाइयाँ और सर्जरी की सुविधा प्रदान करना इनका मुख्य उद्देश्य होता है।
3. **गरीबों और असहायों की मदद:-** ट्रस्टों के माध्यम से भोजन (अन्नदान), कपड़े, और आश्रय (rain baseras) की व्यवस्था की जाती है। वृद्धों और अनाथों के लिए आश्रम भी इन्हीं के द्वारा संचालित होते हैं।
4. **आपदा राहत:-** देश या क्षेत्र में बाढ़, भूकंप या अन्य आपदाओं के समय धार्मिक ट्रस्ट सबसे पहले आगे आकर राहत सामग्री, दवाइयां और आर्थिक सहायता पहुंचाते हैं।
5. **सांस्कृतिक एवं धरोहर संरक्षण:-** धार्मिक ट्रस्ट ऐतिहासिक मंदिरों, मस्जिदों, गुरुद्वारों और मठों के जीर्णोद्धार और रखरखाव में अहम्

भूमिका निभाते हैं। यह हमारी सांस्कृतिक विरासत को अगली पीढ़ी तक सुरक्षित रखने में मदद करता है।

6. **पर्यावरण संरक्षण:-** कई ट्रस्ट वृक्षारोपण (वन महोत्सव), जल संरक्षण और स्वच्छता अभियान जैसे कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं।
7. **आयकर लाभ (Tax Benefits):**भारत सरकार भी इस परोपकारी योग दान (Charity) और मानवता (Humanity) एक-दूसरे के पर्याय हैं। सच्चे मन से किया गया दान न केवल ज़रूरतमंदों की सहायता करता है, बल्कि यह इंसान के भीतर परोपकार, त्याग और सहानुभूति जैसे मानवीय गुणों को जगाकर समाज को जोड़ने का सबसे सशक्त माध्यम है
8. **दान का मानवता में महत्वसहानुभूति और करुणा:-** जब आप किसी की मदद करते हैं, तो आप उसके दर्द को समझते हैं। यही भावना मानवता की नींव है|
9. **समाज में संतुलन:-** दान और पुण्य अमीरी-गरीबी के बीच की खाई को कम करते हैं और समाज में आपसी प्रेम बढ़ाते हैं|
10. **मानसिक संतुष्टि:-** निस्वार्थ भाव से किया गया दान मानसिक शांति देता है और व्यक्ति के आत्म-सम्मान को बढ़ाता है|
11. दान कैसे करें (सनातन और नैतिक दृष्टिकोण)दान केवल धन का ही नहीं होता, बल्कि यह किसी भी रूप में हो सकता है जो समाज के लिए उपयोगी हो।
12. तन का दान:- अपना समय निकालकर किसी वृद्ध, बीमार या असहाय की सेवा करना।
13. मन का दान:- किसी को सही सलाह देना, किसी के दुःख में सांत्वना के दो शब्द कहना।

14. धन का दान:- अपनी क्षमता के अनुसार ज़रूरतमंदों को भोजन, वस्त्र या शिक्षा के लिए सहयोग देना सही दान की पहचानहै गीता के अनुसार, सच्चा और पुण्य फल देने वाला दान वह है जो सही समय पर, सही स्थान पर और बिना किसी प्रतिफल (बदले) की अपेक्षा के किसी योग्य व्यक्ति को दिया जाए दान को महत्व देती है। धार्मिक और धर्मार्थ उद्देश्यों के लिए उपयोग की जाने वाली ट्रस्ट की आय पर कर छूट (Tax Exemption) का प्रावधान है। यह छूट केवल समाज कल्याण, शिक्षा, चिकित्सा और धार्मिक कार्यों के लिए प्राप्त होती है। गुरुद्वारा और मानवता का संबंध अटूट है। गुरुद्वारे केवल पूजा स्थल ही नहीं, बल्कि निस्वार्थ सेवा, समानता (जाति-धर्म से परे) और सर्व-कल्याण के प्रमुख केंद्र हैं यहाँ लंगर (निशुल्क भोजन), चिकित्सा सहायता और जरूरतमंदों की मदद करके मानव सेवा को ही सर्वोच्च धर्म माना जाता है गुरुद्वारे में मानवता की सेवा को मुख्य रूप से इन तीन स्तंभों के जरिए समझा जा सकता है|

1 लंगर (सामूहिक रसोई):- बिना किसी भेदभाव के सभी लोगों को एक साथ जमीन पर बिठाकर मुफ्त भोजन कराना गुरुद्वारे की सबसे बड़ी पहचान है। यह 'पंगत और संगत' का नियम सिखाता है|

2 सेवा:- बिना किसी लाभ या स्वार्थ के दूसरों की मदद करना सिख धर्म का मूल है। गुरुद्वारे में जूते साफ करने से लेकर लंगर पकाने तक का कार्य श्रद्धालु स्वयंसेवा (Volunteering) के माध्यम से करते हैं|

3 मानवीय सहायता:- सिख धर्म के विकिपीडिया (गुरु का द्वार) के अनुसार, आज प्रमुख गुरुद्वारे जरूरतमंदों को आधुनिक चिकित्सा सुविधाएं (जैसे किफायती एमआरआई और पॉलीक्लिनिक) भी प्रदान कर रहे हैं संकट के समय (जैसे प्राकृतिक आपदा या महामारी) में

गुरुद्वारे आगे आकर बिना किसी धार्मिक सीमा के लाखों लोगों के लिए भोजन और आश्रय की व्यवस्था करते है दिल्ली के बंगला साहिब गुरुद्वारे में आज मानवता की दिल्ली का ऐतिहासिक गुरुद्वारा बंगला साहिब एक बार फिर मानवता की सेवा की मिसाल बना है. दरअसल, गुरुद्वारे में स्थित गुरु हरकिशन मानवता की मिशाल पेश कर रहा कोटा का गुरुद्वारा अगमढ़ साहिब — कोटा. मानवता की सेवा के लिए देश में खास पहचान रखने वाले कोटा के गुरुद्वारा अगमगढ़ साहिब की कोरोना में भी खासी चर्चा है। गुरुद्वारा एक ऐसा पवित्र स्थल है जहाँ सेवा, सच्चाई, और समानता को सर्वोपरि माना जाता है।

धार्मिक मठ भारतीय संस्कृति और समाज के प्रमुख स्तंभ हैं। इनका योगदान केवल आध्यात्मिक शिक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि ये समाज कल्याण, साहित्य संरक्षण, शिक्षा के प्रसार और राष्ट्रीय एकता में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं

1. धार्मिक मठों के प्रमुख योगदान:- आध्यात्मिक एवं नैतिक शिक्षा: मठों (विशेषकर शंकराचार्य द्वारा स्थापित पीठों) का मुख्य उद्देश्य वेदों, उपनिषदों और सनातन धर्म के सिद्धांतों का प्रसार करना है | ये लोगों को सत्य, अहिंसा और सदाचार का पाठ पढ़ाते हैं

2. शिक्षा और साहित्य का संरक्षण:- इतिहास से ही मठ ज्ञान के केंद्र रहे हैं। प्राचीन काल में ये छात्रों को वेदों और दर्शन की शिक्षा देते थे आज भी कई मठ स्कूल, कॉलेज और संस्कृत महाविद्यालय चला रहे हैं|

3 समाज सेवा एवं जन कल्याण:- विभिन्न मठ और आश्रम अनाथालय, वृद्ध आश्रम और निःशुल्क चिकित्सालय संचालित करते हैं। संकट के समय ये बाढ़ पीड़ितों और जरूरतमंदों की सहायता में सबसे आगे रहते हैं

4. धार्मिक पर्यटन और सांस्कृतिक एकता:- भारत के विभिन्न कोनों में स्थित मठ (जैसे- बद्रीनाथ, द्वारका, पुरी और श्रृंगेरी के मठ) सांस्कृतिक एकता के जीवंत प्रतीक हैं| ये देश भर के तीर्थयात्रियों को आपस में जोड़ते हैं
5. गरीबों और असहायों को अन्नदान:- मठों में 'भंडारा' (सामूहिक भोज) की परंपरा होती है जिसके माध्यम से प्रतिदिन हजारों साधुओं और गरीब लोगों को निःशुल्क भोजन और आश्रय मिलता है
6. पर्यावरण संरक्षण:- कई मठ अपने परिसरों में गौशालाएं चलाते हैं और बड़े स्तर पर वृक्षारोपण करके पर्यावरण संरक्षण में अपना योगदान देते हैं।
7. मठों की प्रासंगिकता आज के आधुनिक युग में भी बनी हुई है क्योंकि ये भौतिकवादी दुनिया में लोगों को मानसिक शांति और सही दिशा प्रदान करते हैं|

भारतीय ग्रामीण प्रवेश में बाल्यावस्था से ही जीवो पर दया का एक दृश्य



भारतीय सामाजिक परिवेश में मानवता . पर मेरे विचार

वृक्ष कबहु न फल भखे नदी न संचे नीर
परमार्थ के कारने साधु धरे शरीर

जब भी भारतीय किसान अपने खेतों में अनाज निकलता है| तभी ही वह कुछ हिस्सा गरीब जीव जंतु पशु पक्षियों के लिए अलग से रखता है और जब वह चार निकलता है तो उसका कुछ हिस्सा गौशाला में गायों के लिए भेजता है| जो हमारे समाज के मानवीय में दृष्टिकोण को दृष्टि उजागर करता है| हमारे तीज त्यौहार रीति रिवाज विभिन्न धार्मिक उत्सव मानवी दृष्टिकोण को नजर रखकर ही आयोजित किए जाते है इन त्योहारों के मूल में मानवता रची बसी है| मानवीय दृष्टिकोण को उजागर करने वाले अनेक का अनेक दृष्टांत समाज में बिखरे हुए हैं ज जैसे पौराणिक साहित्य में महर्षि दधीचि ने अपनी हड्डियों का दान कर दिया

त्यागमूर्ति महाराज उशीनर (राजा शिवि) की। एक बार, इंद्र और अग्नि ने उनकी परीक्षा लेने के लिए क्रमश बाज़ और कबूतर का रूप लिया। भूखा बाज़, कबूतर का पीछा करते हुए महाराज उशीनर की शरण में आया। महाराज ने कबूतर को अभयदान दिया|

वासुदेव कुटुंब काम की भावना हमारे प्रवेश में नित है| भारत भूमि पर दया व परोपकार के साथ कार्य किया जाता है| हमारे धर्म में भलाई के कार्य करने पर जोर दिया गया है| तथा सच्चाई के साथ में कम करते रहने पर जोर दिया गया है| अनेक धर्म ने धार्मिक कार्यों के लिए धार्मिक ट्रस्ट एवम धर्मशालाएं आदि का निर्माण कर रखा है| ताकि कोई भी गरीब आदमी आराम से विश्राम कर सके और इसी के साथ अनेक धर्म में भोजन की व्यवस्था भी निशुल्क है| जो लोग गरीब हैं उनको निशुल्क भोजन उपलब्ध होता है और बड़े ट्रस्ट जो है उनके द्वारा बड़े-बड़े हॉस्पिटल चलाए जा रहे हैं ताकि वंचितों को चिकित्सा का लाभ मिले और अपना जीवन जी सके इसी के साथ हमारे देश में बहुत सारे एन जी ओ काम कर रहे हैं उन एनजीओ का काम है की गरीब व्यक्तियों को सहायता पहुंचाना ताकि सभी लोग अपना बेहतर जीवन जी सके|

इसी के साथ धर्म के मामले में दान पुण्य करके और गरीबों तक अनेक प्रकार की सुविधा उपलब्ध कराते हैं|

देश के अंदर हजारों की संख्या में धर्मशालाएं मौजूद है| जहां पर प्रतिदिन लाखों आदमी विश्राम करते हैं और देश में लाखों की संख्या में निशुल्क भोजन शालाएं हैं| जिसमें करोड़ों की संख्या में प्रतिदिन लोग निशुल्क भोजन करते है अनेकों लोग हैं जिनको किसी ने किसी प्रकार से सहायता पहुंचाई जाती हैं |यह मानव कल्याण का अनूठा उदाहरण देखने को मिलता है| जिसमें कपड़े चिकित्सा शिक्षा भोजन आदि की व्यवस्था की गई है| ताकि जो लोग अभाव में जी रहे हैं वह भी अपने जीवन को बेहतर बन सके|

देश के अंदर करोड़ों की संख्या में लोग सेवा कार्यों में जुटे हुए जो निशुल्क रूप से लोगों की सेवा करते हैं| बहुत सारे वृद्धाश्रम चल रहे हैं जिनके परिवार में कोई भी नहीं है ऐसे वर्गों को वृद्धावस्था में वृद्ध आश्रम में लाया

जाता है| और वहां उनकी सेवा की जाती है हजारों की संख्या में देश में अनाथालय चल रहे हैं जिनके माता-पिता नहीं है उन बच्चों को वहां पर लाया जाता है और शिक्षा और भोजन की व्यवस्था की जाती है | इसी प्रकार से हमारे देश में बहुत सारे मंदिरों के ट्रस्ट उनके द्वारा भी सेवा कार्य करवाए जाते हैं|

उपसंहार

गोपेश्वर महादेव आश्रम हरियाजुन कुचामन



वर्तमान समय में मानवता की अति आवश्यकता है| क्योंकि धीरे-धीरे मानव में नैतिकता का पतन होता जा रहा है| मानव में अच्छे आचरण का नाश होता जा रहा है| और पाश्च्यात संस्कृति के आने की वजह से भारतीय संस्कारों का नाश होता जा रहा है|

जब हम संयुक्त परिवार में रहते थे तब उस परिवार से हमें परोपकार सेवा सहयोग बड़ो का सम्मान आदि देखने को मिलते थे| लेकिन अब धीरे-धीरे हमारी संस्कृति में भी संयुक्त परिवार खत्म होते जा रहे हैं| और एकल परिवार होते जा रहे हैं| एकल परिवार होने की वजह से मानव मूल्यों का

पतन होता जा रहा है| और यह मानवीय मूल्य हमारे जीवन में बहुत महत्वपूर्ण है|

आज दुनिया के बहुत सारे देशों में युद्ध, मार-काट, हिंसा, आतंकवाद आदि घटनाएं घट रही है| जिसके वजह से मानव भयभीत है और वह डर रहा है| इसलिए हमें एक आदर्श समाज में रहने के लिए अच्छे संस्कारों की आवश्यकता है| और हमारा समाज अच्छा होगा उसमें संस्कार होंगे तो आने वाली पीढ़ियां भी अच्छी होगी| हमारे बहुत सारे कथाकारों ने कहानीकारों ने संगीतकारों ने सभी ने परोपकार की भावना और दान दया धर्म के बारे में बताए हैं|

बहुत सारे कथावाचक अपने प्रवचनों में यह बात जगह-जगह बता रहे हैं| कि हमें मानव की सेवा करनी चाहिए प्राणी मात्र के प्रति दया करनी चाहिए| इस प्रकार के संस्कार आज दुनिया भर में फैलाई जा रहे हैं| तो हमें भी इनसे प्रेरणा लेकर और अच्छे मानव बनने के लिए अच्छे संस्कारों का होना बहुत जरूरी है| जब मानव में संस्कार खत्म हो जाएंगे तो मनुष्य मनुष्य नहीं रहेगा| मनुष्य में राक्षसी गुण आ जाएंगे और वापस से पृथ्वी पर अराजकता फैल जाएगी|

इसलिए हमें अच्छे संस्कारों का, संयुक्त परिवारों का, बड़ों का और हमारे ऋषि मुनियों का, महर्षियों का, संतों का अनुसरण करना चाहिए| और उनके पद चिन्हों पर चलना चाहिए ताकि मानवता जिंदा रहे और हम सुख शांति और भाईचारा और प्रेम भाव से रह सकें| ऐसे विश्व की हमें कल्पना करनी चाहिए|

दया धर्म का मूल है पाप मूल अभिमान |

तुलसी दया न छाडिये जब लग घट में प्राण ||

गोस्वामी तुलसीदास जी कहते है| कि मनुष्य को दया कभी नहीं छोड़नी चाहिए क्योंकि दया ही धर्म का मूल है और इसके विपरीत अहंकार समस्त पापों की जड़ होता है|

सही अर्थों में मनुष्य वही है| जिसके मन में अन्य प्राणों की प्रति दया का भाव तथा जो आजीवन धर्म के मार्ग पर अडिग रहे मानवता ही मनुष्य की सच्ची परिभाषा है| शरणागत की रक्षा करना प्रत्येक व्यक्ति का पहला धर्म है| ये बात सभी धर्मो में कही गई है प्रकृति ने प्रत्येक जीव को अलग-अलग रूप रंग और शारीरिक क्षमताएं प्रदान की है| मनुष्य इन सभी जीवो में प्रकृति की सबसे अच्छी रचना माना गया है|

मनुष्य चाहे तो प्राणी जगत का रक्षक भी बन सकता है और भक्षक भी बन सकता है| किंतु असली इंसान वही है जिसके भीतर दया का भाव हो| संतों ने कहा कि शरीर तो मात्र बाहरी आवरण के समान है| शरीर के अंदर आत्मा सूक्ष्म भाव में बैठी है| हमारे सभी संत महात्मा ऋषि मुनि महर्षियों का व्यवहार आचरण मानवतावादी था|

आज पाश्चयात संस्कृति के प्रभाव में आकर हम अपनी सांस्कृतिक संस्कारों को विस्मित करते जा रहें है| यह हमारे पतन का कारण है घर-घर में क्लेश हो रहे हैं| धन संपत्ति के लिए मारपीट हो रही हैं| बड़े बुजुर्गों का अपमान हो रहा है| उनकी सामने एकल परिवार बनते जा रहे हैं| संयुक्त कुटुंबी पद्धति हर कोई एक दूसरे का सम्मान करता था| प्रेम करना दया परोपकारी भावना थी आज हर कोई अपनी मिथ्या अहंकार में जल रहे हैं|



शाकंभरी शक्ति पीठ कुचामन सिटी के महंत हरिदास जी से वार्तालाप में बताया कि मैने 10 साल तक तपस्या की और तपस्या के बाद में मानव सेवा परमार्थ के लिए निकल गए और आज वह शाकंभरी माता मंदिर पर रहकर जनसेवा और मानव कल्याण के लिए भक्ति पाठ करते हैं| लोगों का कैसा कल्याण हो के उपदेश देते हैं और साथ ही परमार्थ के लिए किस प्रकार से लोगों की सेवा करें आने वाले सभी लोगों को इस प्रकार की शिक्षा देते है |

वह मानव कल्याण और परमार्थ की सेवा में अग्रणी रहते हैं| और उनका कहना है कि आने वाले समय में सामाजिक संस्कारो कम होता जा रहा है| जिससे आपसी रिश्ते खत्म होते जा रहे हैं|

इस प्रकार से हमें सचेत होकर इन नैतिक मूल्यों को बचाना है| नैतिक मूल्यों को बचाकर ही मानव का कल्याण कर सकते हैं| और इसके लिए हमें धर्म आस्थाओं में विश्वास रखना पड़ेगा मानव के प्रति हमें दया भाव रखना पड़ेगा और हमें आज के जो दुर्गुण है| उनसे दूर रहना पड़ेगा इसलिए हम बचपन से परिवार में रहने वाले बच्चों को सद्गुण की शिक्षा देवे साथ ही मानव कल्याण परमार्थ की भावना के लिए हमें आगे बढ़कर कार्य करना चाहिए|

शाकंभरी शक्ति पीठ कुचामन सिटी





शोध सारांश

साधु ऐसा चाहिए जैसा सूप सुभाय|

सार सार को गहि रहै थोथो देई उडाय||

अर्थ¬:- इस संसार में ऐसे सज्जनों की जरूरत है जैसे अनाज साफ करने वाला सूप होता है| जो सार्थक को बचा लेंगे और निरर्थक को उड़ा देंगे|

वर्तमान समय में मानवता की रक्षा के लिए समाज में ऐसे ऋषि, मुनि, महर्षि, महात्मा, संतो की आवश्यकता है जो सूप की तरह व्यवहार कर इस समाज को निर्मल कर दे| बुराइयों का नाश करें और अच्छाइयों का प्रचार प्रसार करें|तभी मानवता मूल रूप में व्याप्त हो पाएगी|

इसी संदर्भ में मानवता पर मेरे कुछ विचार है दया के पावन भाव से मानवता का श्रृंगार किया जाए क्रोध कामवासनाओं की भावनाओं को विराम दिया जाये| दया प्रेम करुणा त्याग परोपकार आदि नैतिक मूल्यों को जीवन के प्रारंभिक अवस्था (बाल्यावस्था)से ही पोषित व संचित किया जाये|

संदर्भ पुस्तके /ग्रन्थ

(1) श्रीमद्भागवत गीता गीताप्रेस गोरखपुर

(2) कल्याण कुज गीताप्रेस गोरखपुर

(3) मानव और संस्कति श्याम चरण दुबे

(4) राजनैतिक विचारधाराए डॉ.एस.सी. सिंघल

(5) भारतीय राजनीतिक विचारक बी.एल. फड़िया

(6) कामायनी जयशंकर प्रसाद

(7) न्याय शास्त्र महर्षि गौतम

(8)योग शास्त्र महर्षि पतंजलि

(9) संख्या शास्त्र महर्षि कपिल

(10) वेदांत शास्त्र महर्षि वेदव्यास

(11) रामायण व महाभारत श्री सी .राजगोपालाचारी

(12) श्रीमद् भागवत व शिव पुराण,नारद भक्ति सूत्र-- स्वामी हर्षानंद

(13) शंकराचार्य की जीवनी --स्वामी निश्चलानंद सरस्वती

(14)गीता --स्वामी चिन्मयानंद इत्यादि संदर्भ पुस्तकों से